संजय की कलम से ..

विकारों पर विजय की प्रतीक है

विजय-दशमी

पुण्यभूमि भारतवर्ष परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि है। इसी अविनाशी भूमि पर कल्याणकारी परमात्मा ने मानवमात्र को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने का दिव्य अलौकिक कर्त्तव्य किया था। उन्हीं ईश्वरीय कर्त्तव्यों की पुनीत स्मृति में भारतीय त्योहार मनाये जाते हैं। लेकिन, अज्ञानता के इस युग में हम उनके ईश्वरीय संदेश को भूल गये हैं और रस्म-रिवाज के रूप में त्योहारों को मनाने लगे हैं। बहुत से लोग तो इनको सामाजिक मनोविनोद का साधन मात्र समझ बैठे हैं। फलस्वरूप हमारा आध्यात्मिक पतन होता जा रहा है। अपनी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से पृथक होकर पाश्चात्य देशों का अंधानुकरण कर हम घोर भौतिकता की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे समय में यह अत्यावश्यक है कि त्योहारों के आध्यात्मिक संदेश को हम पूर्णरूपेण हृदयंगम करें। वस्तुत: ये त्योहार माया की मादक नींद से बेसुध नर-नारी को झकझोर कर जगाने के लिए ही आते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश भारतीयों ने इनके आध्यात्मिक संदेश के प्रति अपने कान बंद कर लिये हैं और गहरी कुंभकर्णी नींद में पड़े हुए हैं।

'विजय-दशमी' – असुरत्व पर देवत्व के विजय का प्रतीक महान त्योहार है। इसके साथ अनेक प्रतीकात्मक पौराणिक कथायें जुड़ी हुई हैं। कहते हैं कि जब असुरों के अनाचार और अत्याचार से धरा प्रकंपित हो उठी थी, देवत्व का लोप हो गया था और मानवता कराह रही थी, तब शक्ति रूपिणी दुर्गा ने उनका विनाश किया और देवत्व की पुनर्स्थापना की। इसी दिन देव विजयी रावण पर राम ने विजय प्राप्त की जिससे देवभूमि भारत पर सतोप्रधान रामराज्य की स्थापना हुई, जिसका गायन करते हम आज अघाते नहीं हैं।

(शेष..पृष्ठ 34 पर)

अमृत-सूची

- पूर्व जन्म की स्मृति... *(सम्पादकीय)* 4
- मेरा बाबा रूहानी सर्जन........6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 7
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- सचित्र सेवा समाचार..........10
- विहंग मार्ग की सेवा...........11
- मांसाहार के नुकसान.........14
- पीस ऑफ माइंड चैनल.......17
- खुदा के नेक बंदे *(कविता)* 17
- रूहानी जादूगर 18
- मन का इलाज................. 19
- गीता सार...................... 20
- बाबा सर्जन की कमाल.......22
- सच्चे का साथी शिवबाबा 23
- आध्यात्मिकता के प्रति.......24
- सचित्र सेवा समाचार......... 27
- बुढ़ापे का भी आनन्द.........28
- सचित्र सेवा समाचार 30
- वैद्यनाथ शिव का आरोग्य....32

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत	90/-	2,000/-
विदेश	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

पूर्व जन्म की स्मृतिः क्यों और कैसे ?

मानव जीवन यादों का पुलिंदा है। जितना आपको याद है, उतना ही आपका जीवन है। याद्दाश्त चली जाये तो जीवन होते भी व्यक्ति हाड़-मांस का निर्जीव ढांचा नज़र आता है।

आजकल भौतिक विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक विज्ञान भी उन्नति की ओर बढ़ रहा है। लोग आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म जैसे विषयों पर चिन्तन करने और जानने को उत्सुक रहते हैं। इसी उत्सुकता में एक प्रश्न सामने आता है कि क्यों कोई बच्चा पूर्वजन्म की बातें बता सकता है और क्यों अन्य बच्चे पूर्वजन्म की बातें भूले रहते हैं।

इस प्रश्न के उत्तर का एक पहलू तो यह है कि जन्म लेने वाली आत्माओं में से कुछ तो सृष्टि-ड्रामा में अपने पार्ट अनुसार सीधी ही परमधाम से उतरकर आती हैं, उनका (इस कल्प में) कोई पिछला जन्म होता ही नहीं है। जिनका पिछला जन्म है, उनमें भी पूर्वजन्म की स्मृति तो रहती है परंतु कुछ में स्पष्ट स्मृति रहती है और कुछ में अस्पष्ट। स्पष्ट, अस्पष्ट का अर्थ समझने के लिए पहले हम यह जानेंगे कि स्मृति मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती है –

अल्पकालीन स्मृति

यह वह स्मृति है जो अल्प समय मन-मस्तिष्क में रहती है फिर तिरोहित हो जाती है। मान लीजिए, हमारा कोई प्रिय मित्र-संबंधी बस द्वारा हमारे शहर में आने वाला है। उसने बस का नंबर बताया HR 01235. हम इस नंबर को याद कर लेते हैं और बस स्टैण्ड पर पहुँचकर आती-जाती बसों पर नज़र रखते हैं। वह बस आई, हमारा मित्र उसमें से उतरा, उसको गाड़ी में बिठाकर हम घर ले आए। अब वह बस का नंबर हमें भूल जायेगा। जीवन के काफी दिन, घंटे, मिनट इस प्रकार की स्मृतियों के होते हैं। भले ही वो स्मृति अवचेतन या अर्धचेतन मन में हो पर चेतन में नहीं रहती। अत: अनावश्यक बातों को भुला देना मानव का स्वभाव है। न भुला पाए तो दिमाग ही खराब हो जाए।

दीर्घकालीन स्मृति

जैसे कोई मनुष्य किसी क्षेत्र विशेष की जानकारी के लिए कोई प्रशिक्षण लेता है तो उसमें सिखाई जाने वाली बातों को बार-बार दोहराकर, लिखकर, उनको याद रखने का पूरा प्रयास करता है इसलिए कि उसे ये बातें व्यवसाय में काम आयेंगी। कई प्रकार के सरकारी कागज़, प्रमाण-पत्र, जो बार-बार काम में आते रहते हैं उनकी जानकारी को दीर्घकालीन स्मृति में रखते हैं। स्टॉक संभालने वाला स्टॉक की चीज़ों को याद रखता है, ये सब दीर्घकालीन स्मृतियाँ कहलाती हैं। परंतु दीर्घकालीन स्मृति भी यदि दीर्घकाल तक प्रयोग में ना आए तो वह भी भूल जाती है जैसे, ज़रूरी कागज़ फाइल में डालकर रखे, साल भर काम नहीं पड़ा, फिर ज़रूरत पड़ी तो यह भूल गया कि फाइल कहाँ रखी है।

इसी प्रकार, कोई व्यक्ति किसी व्यर्थ बात को पकड़ के बैठ जाए, बार-बार उसे दोहराए, पागलों जैसा व्यवहार करे तो बिजली का शाक लगाकर डॉ. लोग उसे वह बात भुलवाते हैं। किसी दुर्घटना में मस्तिष्क पर भारी चोट लगने पर या गहरा सदमा लगने पर भी व्यक्ति की याद्दाश्त चली जाती है। इस प्रकार के अन्य भी कई कारण हैं, जो दीर्घकालीन स्मृति की बातें भी भूल जाती हैं। तो पूर्वजन्म की इस प्रकार की दीर्घकालीन स्मृतियाँ तो तब ही भुला दी गई थीं, अब तक कैसे याद रहेंगी।

अव्यक्त स्मृति

अव्यक्त अर्थात् छिपी हुई, सुषुप्त, संस्कार रूप में नूंधी हुई, जिसके चिन्ह रह जाते हैं, जो व्यवहार और आदतों के रूप में झलकती है। उसके लक्षण दिखते हैं पर पूरी तरह चेतन मन में स्मृति नहीं रहती।

मान लीजिए, एक व्यक्ति, एक बार रेलवे स्टेशन पर गया पर एक

मिनट की देरी के कारण ट्रेन छूट गई और उसका बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य असफल हो गया। इसके बाद उसने अपनी गलती को महसूस किया और जीवन भर, जब भी ट्रेन में जाना होता, 15 मिनट पहले स्टेशन पर जाकर बैठ जाता। समय से पहले पहुँचने का उसका यह संस्कार बन गया। जिस कर्म के परिणामस्वरूप बना वो कर्म भूल गया पर संस्कार (अव्यक्त स्मृति) दिखाई देता है। इसी प्रकार, कोई छोटा बच्चा अंधेरे में छत पर जाने में डरता है जबकि दूसरा भागा-भागा जाता है। कोई बौद्धिक रूप से तीव्र है, कोई स्थूल कार्य में होशियार है, किसी को खेलना, किसी को मिलिट्री की ड्रेस पहनना, किसी को मंदिर में जाकर ध्यान लगाना और किसी को हारमोनियम बजाना अच्छा लगता है। कोई चुप किस्म के बच्चे से दोस्ती करता है, कोई वाचाल से। ये सब हमारी अव्यक्त स्मृति की बातें हैं। इन्हें हम संस्कार भी कहते हैं। इनके आधार पर, पूर्वजन्म कैसा रहा होगा, यह हम जान सकते हैं। इस प्रकार के संस्कार और आदतें हरेक में हैं। इसके कारण ही एक व्यक्तित्व और दूसरे व्यक्तित्व में अंतर है।

नए जन्म का प्यार, पुराना जन्म भुला देता है

जब बच्चा जन्मता है, उसको नये माँ-बाप, नया घर, नया वातावरण मिलता है। उसके जन्म की इतनी खुशियाँ मनाई जाती हैं, माँ-बाप, मित्र-संबंधी उसे बेहद प्यार देते हैं तो ऐसे माहौल में उसे मौका ही नहीं मिलता पिछले जन्म की स्मृतियों की ओर लौटने का। हम सभी अनुभवी हैं, ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय में आने वालों को निमित्त दादियों, वरिष्ठ बहनों-भाइयों का इतना स्नेह मिलता है कि वे कहते हैं, यहाँ आकर हम दिन, महीना, घर-परिवार सब भूल गये। इसी जन्म में, इसी शरीर में, इसी संसार में रहते भी घर-परिवार-शहर की अल्पकाल के लिए विस्मृति-सी हो जाती है। तो बच्चे को नये घर में जन्म लेने के बाद, इतना प्यार मिलता है तो वो पुराने जन्म को क्यों नहीं भूलेगा?

कर्मेन्द्रियाँ छोटी होने के कारण कुछ बता नहीं पाता

जब मृत्यु हुई, पुराना सब छुटा, वह भी एक बड़ी घटना घटी। मृत्यु हुई तो नाम, रूप, देश, काल सब बदल गया जैसे एक तस्वीर पर दूसरी चिपका दी गई तो रही-सही स्मृति भी चली गई। गर्भकाल में लगभग छह मास तो उसके पास पूर्ण विकसित मस्तिष्क ही नहीं था। उस अंधेरी कोठरी में उसकी स्मृतियाँ और ज्यादा सुषुप्त हो गईं। फिर भी मान लो कुछ यादें बचीं भी तो इतना छोटा बच्चा अपनी किसी भी बात को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। बच्चे को हम देखते हैं, कभी अचानक हँसता है, कभी रोता है, यह सब पुरानी स्मृतियों के आधार पर होता है पर कुछ भी बता नहीं पाता है क्योंकि कर्मेन्द्रियाँ छोटी हैं। इस प्रकार, लंबे समय तक बातों को अभिव्यक्त ना किया जा सकने के कारण वे भूल जाती हैं।

नये परिचय की बार-बार जानकारी

मान लो हमने बच्चे का नाम रखा 'लालमोहन'। हम सभी ने बार-बार उसे इसी नाम से बुलाया और यह भी बताया कि यह तुम्हारी माता है, यह पिता है, यह बहन है, यह भाई है, यह बात उसके स्मृति पटल पर बिठा दी गई। जब तक वह बच्चा इतना बड़ा हो कि वह भाषा सीखे और पूर्वजन्म की कोई बात कहना चाहे, उससे पहले उसे नया परिचय सुझा दिया गया। उपरोक्त स्थिति-परिस्थितियों के कारण बच्चे पूर्वजन्म को भूल जाते हैं।

पूर्वजन्म बताने वाले अपवाद रूप होते हैं

जो बच्चे पूर्वजन्म की बातें बताते हैं, वे इसमें अपवाद रूप होते हैं। वे अपनी पुरानी बातों को बने रहने देते हैं। पूर्वजन्म बताने वाले अधिकतम बच्चों ने यही कहा, यह घर हमें अच्छा नहीं लगता। पुराने घर में वो धनाढ्य थे और अब गरीब घर में पैदा हुए, उनको नये में इतना आराम नहीं मिला जितना पुराने में था या उनको इतना प्यार नहीं मिला, जितना पहले मिलता था या उनकी अपनी जो रचना थी, बच्चे-बीबी आदि उनके साथ उनका

अपना मोह इतना था कि नये घर वालों से जुड़े नहीं वो। जिन्होंने नये को स्वीकार नहीं किया और पुराने को बने रहने दिया, वो ही पूर्वजन्म को बता पाये हैं।

वरदान रूप है पूर्वजन्म की विस्मृति

पूर्वजन्म को भूलना मानव जीवन के लिए वरदान है, नहीं तो मानव पिछले राग-द्वेष, मोह-ममता के व्यवहार में इस जन्म में भी उलझता रहेगा। किसी को देखकर उसे स्मृति आयेगी कि इसने पिछले जन्म में मुझसे दस हज़ार रुपये उधार लिये थे, तो उससे माँगने बैठ जायेगा। किसी को देख स्मृति आयेगी, इसने पूर्वजन्म में मुझे धक्का मारा था। उससे बदला लेने पर अड़ जायेगा। इस प्रकार वह बचपन का या नये जन्म का कोई आनन्द नहीं ले पायेगा। पिछला भूलकर नया जन्म शुरू करना, यह प्रकृति का सुन्दर नियम है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

मेरा बाबा रूहानी सर्जन

● ब्रह्माकुमारी निशा, चौमू, जयपुर

मेरी उम्र 37 वर्ष है। सन् 1999 से प्यारे शिव बाबा की पढ़ाई पढ़ रही हूँ। कर्मभोग के रूप में मुझे अनेक शारीरिक रोग मिले हैं। कमाल है प्यारे शिव बाबा की जो उन्होंने मुझे श्रीमत पालन करने की शक्ति प्रदान की है। मैंने महसूस किया कि रूहानी बाबा, रूहानी सर्जन भी है। मार्च, 2012 अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर रूहानी सर्जन शिवबाबा को मैंने शारीरिक रोगों के बारे में बताया। उन दिनों मेरी रीढ़ की हड्डी में दर्द था, उठने-बैठने-लेटने आदि में काफी तकलीफ होने लगी तो जाँच करवायी। डॉक्टर ने मुझे 7 दिन के लिए पूर्ण आराम करने के लिए कहा परन्तु मेरा मन कहता था कि बाबा मुझे ठीक करेगा। इसलिए डॉक्टर से दवा लेने के बाद मैं सीधा बाबा के पास (स्थानीय सेवाकेन्द्र) चली गई। नुमा शाम (6.30 बजे) का योग चल रहा था, मैं बाबा के सामने बैठ गई। अचानक संकल्प आया कि यह दवा मैं बाबा के सामने रखूँ परन्तु असमंजस में थी कि रखूँ या नहीं। मैंने दवा बाबा के सामने रख दी और बाद में दवा निमित्त दीदी के हाथ में रखी। महसूस हुआ जैसे बाबा कह रहे हैं, तुम ठीक हो जाओगी। मुझे अनुभव हुआ कि आज 18 मार्च, 2012 अन्तर्राष्ट्रीय योग के जरिये मैंने रूहानी सर्जन से अपाइंटमेंट ली है और अपना इलाज उन से करवाया है।

रोग के कारण मैं बहुत मुश्किल से सेन्टर पर आई थी परन्तु योग के दौरान मुझे महसूस हुआ कि बाबा की पवित्र किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और मुझे शक्ति का एहसास होने लगा। मैं प्यारे बाबा के प्यार में खो गई। मैंने अनुभव किया कि शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा के तन में मेरे पास आये हैं और अपना प्यार भरा हाथ मेरे सिर पर रखा और फिर पीठ को सहलाया। मुझे बाबा के हाथ का स्पर्श बहुत ही हल्का और रेशम के समान महसूस हुआ। मैं एकदम हल्की हो गई, देह का भान नहीं रहा। वो एक घंटा, जो मैंने बाबा के साथ बिताया, जिंदगी का सबसे अच्छा और पहला अनुभव बन गया।

योग के समाप्त होने पर जब घर जाने के लिए कुर्सी से उठी तो ऐसा लगा मानो कोई दर्द ही नहीं है, चेहरे पर रूहानी चमक आ गई। यहां तक कि कुर्सी को उठा कर स्वयं यथा स्थान रखा। कमाल प्यारे बाबा की, मैं एकदम ठीक हो गई। परिवार वालों को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं खुशी से झूम उठी। बाबा के कमरे में बाबा का धन्यवाद किया और मन झूम-झूम कर एक ही गीत गा उठा, ओ बाबा आपने कमाल कर दिया। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

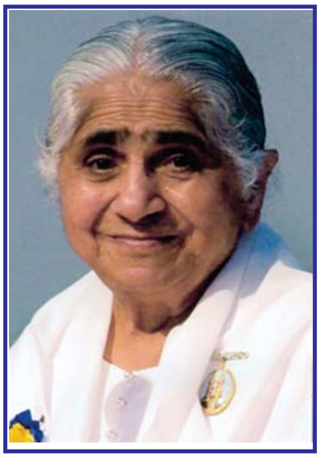

प्रश्न:- दादी गुल्जार और आपसे हम सबको पवित्रता तथा साइलेंस की शक्ति की भासना आती है, हमसे भी आये, उसके लिए क्या करें?

उत्तर:- बाबा के बोल दिल से लग जाने पर वैसी धारणायें स्वत: होती जाती हैं। गुल्जार दादी ने बाबा के बोल ऐसे ले लिये जैसे वरदान के रूप में वो बोल आज दिन तक काम कर रहे हैं। बाबा के शब्दों को दिल से पकड़ लिया है इसलिए वो ऐसे बाप समान लायक बनी हैं। बाबा ने मम्मा को कहा, कृष्ण की राधा बनेंगी? बस, वो बात दिल में लग गयी तो वो श्रेष्ठ धारणायें करना शुरू हो गया, क्या चलन थी मम्मा की। सो वो मम्मा सो श्री राधे, श्री लक्ष्मी बन गयी। दादी गुल्जार द्वारा फिर अव्यक्त स्थिति बनाने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न:- बाहर की दुनिया में सब पैसे और पोजीशन के द्वारा चलता है यहाँ ऐसे नहीं चलता है, यहाँ सब कुछ होता है लाइट रहने से, तो हम कैसे डबल लाइट रहना सीखें?

उत्तर- सभी शास्त्रों में शिरोमणि गीता है, कई बातें गीता में अच्छी लिखी हुई हैं। पहले अध्याय में है, कौरव और पाण्डव क्या करत भये? अर्जुन तुम यह सोच, कौरव क्या करता है, पाण्डव क्या करता है? कौरव मनी और मान के आधार पर चलते हैं, पाण्डवों के लिए तो एक प्रभु ही सब कुछ है। पाण्डव समझता है, प्रभु तू है तो सब कुछ है, यह अन्दर जड़ में पक्का हो तो कभी कोई अप्राप्ति नहीं महसूस होती है। स्वमान में रहना माना जो बाबा से प्राप्ति है उसे जीवन में लाना, जितना भी बाबा का खजाना है वो सब हमारे में आ जाये तो कोई कमी नहीं है। बाबा जो आपने दिया है, वो सबको मिले। पाण्डव भले पाँच थे, कौरवों की विशाल सेना थी फिर भी जीत किसकी हुई? मैं पाण्डव हूँ तो भगवान की तरफ से पाँच गुण आ जाते हैं। पहले है अर्जुन, उसे भगवान का ज्ञान बहुत अच्छा लगता है। गुह्य है, गोपनीय है, रहस्ययुक्त है। जैसे भगवान सुनाता है वो उस एक-एक बात से खुश होता है। नकुल कॉपी करता है बाप को, नकल करने की अक्ल चाहिए। जैसा वो है वैसा ही करेगा। नकल करने से एकदम उन जैसा बन जाते हैं। भीम भण्डारी है, यज्ञ की सेवा में हड्डियां देगा क्योंकि भगवान का यज्ञ है। यज्ञ सेवा से कइयों की फरिश्ते जैसी लाइफ बन गयी है। सहदेव, सबके साथ सहयोगी। फिर युधिष्ठिर सत् धर्म सत् राज्य। धर्म में भी सच्चाई, कारोबार में भी सच्चाई। ऐसे पाँच गुण जिसमें है वो है प्रभु का प्यारा, सबसे न्यारा। वह मनी और मान की इच्छा से मुक्त है तो प्रैक्टिकली जीवनमुक्त है।

प्रश्न:- याद में रहना नेचुरल कैसे हो?

उत्तर:- जो अपने आपको और बाबा को अच्छी तरह जानता है, उसको अपना बनाता है, वह और किसी (पराई और पुरानी बात) को नहीं देखता, उसे एक बाबा ही दिखाई पड़ता। अगर इतने सालों से बाबा का बच्चा बनने के बाद भी अभी तक भी वही पुरानी और पराई बातें सोचते हैं,

बोलते हैं या देखते हैं, तो वे बाबा से दृष्टि कैसे ले सकेंगे! अभी समय ऐसा है। जो बातें बीती हैं, उन्हें बीती सो बीती करके बिन्दी लगायेंगे तो बाबा की याद में रहना नेचुरल हो जायेगा, यह बाबा को बहुत अच्छा लगता है। तो चेक करो दृष्टि, वृत्ति, संस्कार, स्वभाव में कोई पुरानी बात है क्या? बाबा तो सब देखता है, सब चेक करता है तब तो चेंज करने लिये होमवर्क देता है।

प्रश्नः- सेवा करते अवस्था नीचे ना आये, उसके लिए क्या सावधानी रखें?

उत्तरः- आपे ही करे सो देवता। निमित्त भाव और नम्रता स्वरूप से सेवा करने से अवस्था से नीचे नहीं आते हैं। कराने वाला करा रहा है, संगमयुग है, मैं अकेली नहीं कर रही हूँ, सब मिल करके कर रहे हैं। कोई भी काम अकेला कोई नहीं कर रहा है, जो अभिमान रखे। मैं करता हूँ, यह नहीं कहो, मैं नहीं कर सकता हूँ, यह भी नहीं कहो, ऐसी बातें अवस्था को खराब कर देती हैं। अपने ही शब्द, अपने ही संकल्प अवस्था को खराब कर देते हैं यानि नीचे कर देते हैं। अभिमान वाला यह भी नहीं समझता कि मैं नीचे उतरा हुआ हूँ। उस घड़ी उससे ओम् शान्ति कहो तो अपमान महसूस करेगा। इसलिए ध्यान रहे, संगमयुग है अन्दर ही अन्दर हर्षित रहने का, यह टाइम फिर नहीं मिलेगा। कुछ होता भी है तो भी ठीक है, हमको तो खुश रहना, खुशी बांटना है।

प्रश्नः- कई बार औरों के संस्कार ऐसे सामने आते हैं, जो थोड़ा अन्दर मन में थकावट हो जाती, फिर इतना उमंग-उत्साह नहीं रहता, उस समय क्या करें?

उत्तरः- यह गलत है। उस घड़ी साक्षी हो करके सुनो, अपनी बुद्धि नहीं चलाओ। यह ठीक नहीं बोलता है, सदा ही ऐसे बोलता है... यह ख्याल भी नहीं आना चाहिए। जब किसी बात का मुझे रिएक्शन होता है तब थकावट होती है। पर जैसे बाबा साक्षी है, ऐसे मुझे भी साक्षी स्थिति बनानी है तब बाबा मेरा साथी है। मैं बाबा का साथी होकर रहूँ तो दूसरों में भी परिवर्तन आता है, नहीं भी आया पर मैं उसकी परवाह न करूं। कोई भी मेरे से असन्तुष्ट न हो। अगर मैं थक गई तो उसे सन्तुष्ट नहीं कर सकूंगी। कोई भी बात करने आता है तो सोचेंगे यह बात पूरी करे ना, यहाँ से जल्दी जावे ना.... यह ख्याल आया तो मैं कोई सच्ची मददगार नहीं हुई। वो अपने अनुसार अपने को राइट समझ करके राय देता है या कुछ भी है। कोई सेवा का, योग का प्लैन लेकर आता है और वह उसमें दृढ़ है.. हम उसकी बात को काट न देवें। हमारे अन्दर से निकले कि अच्छा है, ठीक है... तुम्हारा विचार है ना, हो जायेगा। ऐसे अन्दर में धीरज है तो शान्ति है। वह शान्ति हर समय, हर श्वास में, संकल्प में काम करती रहे। कोई आत्मायें असुल ऐसी हैं जो उनको चेंज नहीं होना है, उसको अपने अन्दर जो प्लान है, जो विचार है उस पर रहना ही है, तो ड्रामा है, उसका भी यह पार्ट है। अब इसमें मुख्य बात है अपनी सम्भाल ज़रूर करें, हमारी थकावट मेरी स्थिति को कभी भी अचल-अडोल बनने नहीं देगी। नुकसान मेरे को होगा। तो यह बात सभी को मैं कहती हूँ, कोई भी कारण से चारों सबजेक्ट में पास होना हो तो थकावट को नॉट एलाऊ। उस घड़ी एक विधि है, बाबा को मैंने खुद देखा, समझेगा टू मच बातें हैं, साधारण बातें हैं, बाबा के ढंग के लायक नहीं हैं, तो उस घड़ी बाबा इतना साइलेंस में चला जाता जो बोलने वाले का बोलना ही बन्द हो जाये। फिर उसका माइन्ड चेंज हो जायेगा, जिसको बाबा आजकल मनसा सेवा कहता है। शब्दों द्वारा या हमारे विचार द्वारा वो स्वीकार नहीं करेगा, पर भावना उस आत्मा के प्रति मैं कम न करूँ। स्वीकार करे न करे, पर मैं अपनी भावना कम न करूँ, तो कभी न कभी शायद उसको मदद मिल जाये परन्तु पर्सनल आज एक बारी एक से मेरी भावना कम होगी तो कल दूसरे से हो जायेगी, यह मेरी आदत हो जायेगी। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका श्रावण मास के सप्तरंगी इंद्रधनुष के समान है। इसमें 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' पढ़कर पुरुषार्थ के लिए नई दिशा मिलती है। अनेक आत्माओं के हृदयस्पर्शी अनुभव आते हैं। साकार मम्मा-बाबा की पालना वाले भाई-बहनों के अनुभव होते हैं। हर पेज के नीचे बहुत अच्छे स्लोगन आते हैं। महिला दिन, कामगार दिन, व्यसनमुक्ति दिन, पर्यावरण दिन इत्यादि विशेष दिनों के खास लेख आते हैं। त्यौहार आने से पहले उनका अर्थ समझाया जाता है। अनेक गीत, कविताओं की रिमझिम बरसती है। चारों ओर के कार्यक्रमों के सुन्दर छायाचित्र देखने को मिलते हैं। ऐसी खूशबूदार पत्रिका पढ़कर मन मयूर नाचता रहता है। जून, 2012 अंक में 'बीज का बड़प्पन' लेख बहुत पसंद आया। बहुत कुछ सीखने को मिला। छोटा-सा बीज हिम्मत और साहस से सबका सामना करके, सहन करके, झुककर आगे बढ़ता रहा और जगत को खूशबू देने का अपना संकल्प पूरा किया। ज्ञानामृत सचमुच मन को शांत, हृदय को शुद्ध, बुद्धि को विशाल बनाता है। आँखें शीतल हो जाती हैं। मुख मीठा होता है। ज्ञानामृत की जितनी सराहना करें, थोड़ी ही है।

– ब्र.कु. छाया टेकाले, बार्शी

जून, 2012 अंक पढ़ा। उमंग-उत्साह बढ़ाने वाला अंक है। सभी लेख व कवितायें ज्ञानवर्धक हैं। कुछ विषय अति रोचक लगे जैसे 'संजय की कलम से', 'एक नज़र सतयुगी प्रकृति पर', 'मैं और मातेश्वरी', 'बीज का बड़प्पन', 'झूठी प्रशंसा – दुर्गुण का द्वार', 'बनो फरिश्ते ब्रह्मा जैसे' आदि। यह पत्रिका नाम के अनुरूप बाबा की शिक्षाओं का अमृतपान कराती है। इसकी तारीफ में क्या कहें! हमेशा कुछ अंक साथ अवश्य रखता हूँ, अन्य को भी बाबा की शिक्षाओं से परिचित कराने का प्रयास करता हूँ।

– ब्र.कु. गौरव, लखनऊ

मार्च, 2012 अंक में 'सहनशक्ति' लेख पढ़ा। सहन करना माना कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति को बढ़ाना है। जिस आदमी के मन में बुराई होती है, वह कठिन परिस्थिति का सामना करने में असमर्थ होता है परंतु जिसमें अच्छे गुण हैं वही सहन करने योग्य होता है। अपशब्द रूपी पत्थर मारे जाने के बाद भी मीठे बोल देने का काम वही आदमी करता है जो स्वयं सद्गुणों से भरा हुआ होता है। जब तूफान आते हैं तब छोटे नाजुक पौधे झुकने के कारण सुरक्षित खड़े रहते हैं और अकड़ वाले गिर जाते हैं। पत्रिका हमें संतुष्ट रहने में मदद करती है। धन्यवाद!

– वसंत गणपति सुतारभाई,
पलुस (महाराष्ट्र)

जुलाई 2012 के अंक में 'माता, संस्कार निर्माता' लेख पढ़ा। लेख बहुत असरदार, अचूक और ज्ञानवर्धक है। कहानी के माध्यम से माँ के दायित्व का सुंदर चित्रण किया गया है। पढ़कर दिल बाग-बाग हो गया। दिल के कोने से यह आवाज आई, यह लेख आज से दस-पंद्रह वर्ष पहले लिखा होता और पढ़ा होता तो...। 'कान में सुना दीजिये दो बातें', पढ़कर बेहद अच्छा लगा। अक्सर माँ यह शिक्षा देती है लेकिन इसके बावजूद अगर बच्चों पर असर न करें तो क्या समझना चाहिए – भाग्य का खेल या कर्म का लेखा? लेखिका बहन का नवंबर अंक का लेख 'भूख-शांति की या रोटी की' भी बेहद पसंद आया।

– ब्र.कु.राजरानी, इलाहाबाद

अगस्त, 2012 में 'वाशिंगटन डी.सी. में आध्यात्मिकता' लेख पढ़ा। अमेरिका में संचालित ब्रह्माकुमारीज़ के मैकलिन केन्द्र के विषय में रोचक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी मिलने के साथ-साथ पढ़ते समय लगा जैसे मैं मेकलिन सेन्टर पहुँच कर वहाँ की दिव्यता एवं रूहानियत का अनुभव कर रहा हूँ।

– ब्रह्माकुमार किशन, रतलाम

विहंग मार्ग की सेवा का प्रारंभ - 2

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में – विहंग मार्ग की सेवा, आदरणीया दादी निर्मलशांता के सहयोग से प्रदर्शनी की सेवा का प्रारंभ, ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि को ईश्वरीय सेवार्थ आम और प्रदर्शनी सेवार्थ खास मुंबई भेजा आदि बातों के बारे में लिखा था।

इसके बाद चित्र धीरे-धीरे बनते रहे और नये-नये विचार निकलते रहे। दादी प्रकाशमणि जी भी वहीं उपस्थित थी इसलिए उनसे सभी चित्रों की व्याख्या (विवरण) हमको मिलती रही। गत्ते पर ड्राइंग पेपर लगाकर चित्र बनाते थे। एक-दो अन्य अच्छे चित्रकार हमें मिले जिससे चित्र बनाना सहज होता गया। मातेश्वरी जी भी उस समय मुंबई में थीं। मातेश्वरी जी का ऑप्रेशन हुआ था और उनको हॉस्पिटल में उपचार के लिए जाना पड़ता था। साथ-साथ प्रदर्शनी के चित्रों का कारोबार भी चलता रहता था। जब डॉक्टर से छुट्टी मिली तब आबू जाने का कार्यक्रम बना। मातेश्वरी के साथ आबू जाने का सौभाग्य मुझे मिला। जाने से पहले मैंने मातेश्वरी से प्रदर्शनी के चित्रों के बारे में राय-सलाह की। मातेश्वरी जी के पास अनुभव था। पहले जब वे 8 महीना मुंबई में रही थीं तब लक्ष्मी-नारायण का चित्र बनाने के निमित्त घाटकोपर के काकू भाई तथा मैं बने। छपाई में तथा चित्र में किसी प्रकार की आध्यात्मिक या वास्तविक त्रुटियाँ न रह जायें, इसके बारे में मातेश्वरी जी का मार्गदर्शन हमें मिलता था। मातेश्वरी जी गहराई में जाकर लक्ष्मी-नारायण के चित्र की त्रुटियों के बारे में हमारा ध्यान आकर्षित करती थी। प्रदर्शनी के चित्र बनाते समय हमने इन अनुभवों का लाभ उठाया।

मातेश्वरी जी से मैंने पूछा कि प्रदर्शनी का बजट कितना होना चाहिए तो मातेश्वरी जी ने 750 रुपये का बजट पास किया। उस समय तो हमने कहा कि मातेश्वरी जी, हम 750 रुपये से भी कम खर्च में यह प्रदर्शनी करेंगे। ट्रेन से मैं और मातेश्वरी जी मुंबई से अहमदाबाद आये। अहमदाबाद से आबू के लिए दिल्ली मेल में बैठना था, उसी बीच एक विशेष बात बन गई। मातेश्वरी जी के नाश्ते के बारे में हमने अहमदाबाद के बटुक भाई को समाचार दिया था। वो मातेश्वरी के लिए नाश्ता लेकर आया। मैंने मातेश्वरी जी से क्षमा मांगते हुए कहा कि हम गुजरातियों ने अहमदाबाद में सेवा नहीं की है इसलिए सेन्टर ना होने के कारण बटुक भाई से नाश्ता मंगाना पड़ा।

मातेश्वरी जी ने कहा, आप देखना, आगे चलकर अहमदाबाद में बहुत सेवा होगी। इस प्रकार मातेश्वरी जी से गुजरात की सेवा का वरदान मिला और बाद में गुजरात की सेवा शुरू हुई। गुजरात की सेवा विहंग मार्ग की सेवा का साक्षात् परिणाम है।

आबू में मम्मा के साथ पहुँचा। क्लास में मातेश्वरी जी का स्वागत हुआ और मातेश्वरी जी ने उसी दिन दिनचर्या अनुसार कार्यव्यवहार प्रारंभ कर दिया। रोज़ रात को कचहरी कराने की ज़िम्मेवारी मम्मा की थी। जैसे ही रात्रि क्लास में बाबा पहुँचे, बाबा ने मम्मा से पूछा, कचहरी कराई या नहीं। मम्मा ने कहा, जी बाबा। मुझे मम्मा से यह बात सीखने को मिली कि चाहे कितनी भी शारीरिक व्याधियाँ हों पर हमें जो भी ईश्वरीय ज़िम्मेवारी मिली है, उसे निभाना ही चाहिए। इस कारण मैंने भी अपने जीवन में चुस्ती लाने का संकल्प किया। आबू में मैं दो दिन रहा और मैंने ब्रह्मा बाबा से प्रदर्शनी के चित्रों के बारे में बात की। साथ में मातेश्वरी जी भी बैठे। मुंबई पहुँचने के बाद ब्रह्मा बाबा ने परीक्षा लेना शुरू किया। बाबा के पत्र आते, बच्चे, झाड़, त्रिमूर्ति और गोले का चित्र ही काफी है, अन्य सब चित्र बनाने का झंझट क्यों करते हो? ऐसे-ऐसे पत्र आते कि मुझे समझ नहीं आता कि यह

ब्रह्मा बाबा का डायरेक्शन है या ब्रह्मा बाबा परीक्षा ले रहे हैं इसलिए मैं मातेश्वरी जी से पूछता था कि बाबा के इस तरह के पत्रों का मैं क्या अर्थ लूँ। तब मातेश्वरी जी के पत्र आते रहे कि बच्चे, प्रदर्शनी के चित्र बनाते आगे बढ़ते रहो। आगे चलकर मालूम पड़ेगा कि बाबा का यह डायरेक्शन परीक्षा लेने के लिए था ताकि हमारा प्रदर्शनी सेवा में विश्वास सौ प्रतिशत बैठे।

प्रदर्शनी के उद्घाटन के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल भ्राता मंगलदास पकवासा को निमंत्रण दिया गया जिसे उन्होंने सहज स्वीकार कर लिया। जिस स्कूल में मैं पढ़ा था, उसके प्रिंसिपल तथा ट्रस्टियों से बात कर उस भवन के तीन बड़े कमरे तथा कंपाउंड प्रदर्शनी की सेवा के लिए नि:शुल्क मिल गये। दो कमरों में हमने प्रदर्शनी के चित्र लगाये, खादी कमीशन द्वारा बनाये हुए बहुत सुंदर स्टैण्ड हमें नि:शुल्क मिले थे जिन पर हमने चित्र लगाये। तीसरे कमरे में कल्प वृक्ष का चित्र और दिल्ली के भ्राता कवि जी के द्वारा उसके ऊपर बनाये गीत का कार्यक्रम रखा।

प्रदर्शनी के उद्घाटन के सात दिन पहले तक ब्रह्मा बाबा के परीक्षा के पत्र ही आते रहे। रविवार को प्रदर्शनी का उद्घाटन होना था, उससे एक हफ्ते पहले रविवार के दिन एक अद्भुत बात बन गई। रविवार के दिन वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर भोग का कार्यक्रम होता था। दादी पुष्पशांता भोग लेकर जा रही थी। उसी दिन हमें प्रदर्शनी के निमंत्रण कार्ड बांटने थे इसलिए हमने दादी पुष्पशांता से कहा कि गो सून, कम सून। पुष्पशांता दादी संदेश लेकर वतन में गई और फौरन आ गई। हम भोग की सामग्री उठाने लगे तो उसने मना कर दिया। हममें से किसी को समझ नहीं आया कि यह मना क्यों कर रही हैं और भोग का संदेश क्यों नहीं सुना रही हैं। हम दस-पंद्रह मिनट तक सोचते रहे कि यह क्या हो रहा है। अचानक मुझे ख्याल आया कि हो सकता है कि शिवबाबा की पधरामणि हुई हो इसलिए मैं नम्रतापूर्वक संदली के पास गया और पूछा, आप बाबा हैं? क्या आपका अवतरण इस तन में हुआ है? उत्तर मिला, हाँ, मैं बाबा आया हूँ। हमने कहा, आप कैसे आये? बाबा ने कहा, मैं बच्चों को प्रदर्शनी के चित्रों में करेक्शन देने के लिए आया हूँ।

बाबा ने प्रदर्शनी के चित्र क्लास के हॉल में चारों तरफ लगाने को कहा। फिर उठकर एक-एक चित्र पर बताते गये, इसमें यह करेक्शन करो, इस पर ऐसे समझाओ। सुबह आठ बजे से दोपहर के ढाई बजे तक बाबा प्रदर्शनी की सेवा के बारे में श्रीमत देते रहे। बीच में मैंने शिवबाबा से कहा, बाबा, आपको तो भूख नहीं लगती लेकिन रथ को तो लगी होगी। आप ब्रह्मा भोजन करेंगे? बाबा ने कहा, बच्चे ब्रह्मा भोजन खिलायेंगे तो बाप ज़रूर खायेंगे। ढाई बजे से तीन बजे तक बाबा ने सबको अपने हाथ से गिट्टी खिलाई। ब्रह्मा भोजन के बाद मैंने शिवबाबा से सवाल पूछा, बाबा, अभी तक साकार बाबा से हमें प्रदर्शनी की सेवा के लिए इतना सहयोग नहीं मिला है, इसका कारण समझ में नहीं आता। बाबा प्रदर्शनी की सेवा पसंद नहीं करते या हमारी परीक्षा ले रहे हैं? हमने कल सभी चित्रों की व्याख्या (Explanation) टेप में भरकर मधुबन भेजी है, आज बाबा को मिल गई होगी और बाबा ने सुन भी ली होगी लेकिन अभी तक बाबा का कोई जवाब नहीं आया है, इस प्रकार से बाबा का सहयोग नहीं मिलता है। तब शिवबाबा ने कहा, आपकी टेप ब्रह्मा बच्चा सुन रहा है और कल से उनके विचारों में परिवर्तन होगा और वे आपको पूरा ही सहयोग देंगे, साथ में तुम्हारी मातेश्वरी भी बाबा को बता रही है कि मैंने प्रदर्शनी के चित्र देखे हैं।

अगले दिन ही ब्रह्मा बाबा ने सारे भारत के सभी महारथी भाई-बहनों को टेलीग्राम तथा पत्र लिखा कि मुंबई की प्रदर्शनी की सेवा में उपस्थित हो जायें। प्रदर्शनी के चित्र बने तो प्रश्न उठा कि प्रदर्शनी का नाम क्या रखें तो

मैंने, निर्वैर भाई, ऊषा तथा दादी निर्मलशांता ने विचार कर चार नाम निकाले। दादी रतनमोहिनी की माताजी देवी माता संदेशी थी, उन्हें हमने चार नाम कागज़ पर लिखकर दिये। वे चार नाम अंग्रेजी में लिखे थे। माताजी अंग्रेजी जानती नहीं थी। मैंने कहा कि बाबा जिस नाम पर निशान लगाये, आप देखकर आना और हमें बताना। जब वे वतन से वापस आई तो उन्होंने बताया कि वतन में बाबा ने तीसरे नाम 'विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी' पर निशान लगाया था। इस प्रकार विहंग मार्ग की प्रदर्शनी की सेवा में अव्यक्त बापदादा ने पूरा ही सहयोग दिया। सुबह 8 बजे से 3 बजे तक हमारे साथ रहकर हम बच्चों को करेक्शन देते रहे। फिर तो हमारे पास सबके टेलीग्राम आने लगे। सबके रहने का प्रबंध किया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन 24 दिसंबर को शाम को रखा गया। महाराष्ट्र के तत्कालीन गवर्नर आये और उन्होंने उद्घाटन किया। फिर प्रदर्शनी के दोनों हॉल में लगाये चित्र देखे, तीसरे हॉल में कल्पवृक्ष का चित्र भी संगीत के साथ देखा, फिर उनके सामने ऑपिनियन बुक रखी। उन्होंने कहा, मैं तो Solicitor हूं, हम ज्यादा बोलते और लिखते नहीं हैं इसलिए मैं एक ही शब्द में प्रदर्शनी के बारे में अपना ओपिनियन लिखूँगा। उन्होंने अंग्रेज़ी में Marvelous अर्थात् अद्भुत प्रदर्शनी लिखकर प्रदर्शनी की महिमा बढ़ाई। बाद में कंपाउंड में स्टेज कार्यक्रम भी रखा था, वहाँ भी वे आये। ऊषा जी स्टेज सेक्रेटरी थी। मैंने संस्था का परिचय दिया। दादी प्रकाशमणि ने प्रदर्शनी के चित्रों का परिचय दिया। अंत में गवर्नर का भाषण शुरू हुआ। अपने भाषण में उन्होंने बहुत सुंदर बात कही कि मैं तो सोलिसिटर हूँ, मैं कोई भी काम फ्री नहीं करता हूँ, हर काम की फीस लेता हूँ इसलिए सभी बी.के.भाई-बहनों को यही कहता हूँ कि मेरी फीस है – न केवल भारत के कोने-कोने में किंतु सारे विश्व के कोने-कोने में जाकर इस प्रदर्शनी का आयोजन कर परमात्मा का संदेश सबको देना।

इस प्रकार से शिवबाबा ने गवर्नर के मुख द्वारा विहंग मार्ग की सेवा के विस्तार का वरदान दिया। बाद में दादी प्रकाशमणि ने गवर्नर को सात दिन का कोर्स करने को कहा तब उन्होंने कहा कि थोड़े समय में ही मेरी कार्यअवधि समाप्त होने वाली है, मैं गवर्नर पद से जब सेवानिवृत्त होऊंगा तब आपके वाटरलू मेन्शन सेवाकेन्द्र पर आकर सात दिन का कोर्स करूँगा। सचमुच करीब एक मास बाद वे सेवानिवृत्त हुए और अपने घर से रोज गाड़ी में वाटरलू मेन्शन सेन्टर आकर सात दिन का कोर्स किया। इस प्रकार विहंग मार्ग की सेवा द्वारा वीआईपी सेवा का भी आरंभ हुआ।

प्रदर्शनी के उद्घाटन के दिन शाम 8 बजे मधुबन से फोन आया, उस समय फोन इतना प्रचलित नहीं था। कोई बड़ा श्रेष्ठ कार्यक्रम होता तो ही फोन करते थे। जैसे ही फोन पर बाबा की आवाज़ सुनाई दी, मैंने बाबा से पूछा, बाबा, मधुबन में सबकी तबीयत ठीक है? बाबा ने कहा, कोई ऐसी बात नहीं है, यहाँ सब बच्चे मौज में हैं। फिर मैंने पूछा, बाबा, आपने फोन क्यों किया? बाबा ने कहा, बच्चों को अक्ल देने के लिए बाप ने फोन किया। बाप जानता है कि बच्चों में इतनी भी अक्ल नहीं है कि प्रदर्शनी की सेवा का समाचार बाप को दें कि गवर्नर आया कि नहीं, उन्हें प्रदर्शनी की सेवा अच्छी लगी या नहीं। इसलिए बाप को फोन करना पड़ा।

बाबा ने फोन में एक अच्छी बात सुनाई कि तुम्हारी मातेश्वरी 28 दिसंबर को निकल 29 दिसंबर को मुंबई पहुँचेंगी, वे प्रदर्शनी देखकर अपने विचार आपको बतायेंगी। मुम्बई पहुँचने के बाद मातेश्वरी जी ने सभी महारथी भाई-बहनों से प्रदर्शनी की सेवा के बारे में राय पूछी कि यह विहंग मार्ग की सेवा है या नहीं। सबकी राय से मातेश्वरी जी ने, प्रदर्शनी की सेवा विहंग मार्ग की सेवा है, यह सर्टीफिकेट दिया। ❖

दूसरों के विचारों को सम्मान दें तो वे आपके मददगार बन जायेंगे

विश्व शाकाहार दिवस पर विशेष

मांसाहार के नुकसान

● ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

इस पृथ्वी पर जितने भी जीव-जन्तु, पशु-पक्षी आदि पल रहे हैं, कुदरत ने उन सभी के रहने व भोजन की व्यवस्था पहले से कर रखी है। इस व्यवस्था को मनुष्य के अलावा प्राणियों ने भी स्वीकारा है। मनुष्य ही एक ऐसा जीव है, जो कुदरत-प्रदत्त स्वास्थ्यवर्धक खाद्य-पदार्थों के होते हुए भी अन्य पशुओं का वध कर उनका भक्षण करता है। मांसाहारी पशु, मनुष्यों को जंगल से दूर रखते हैं ताकि जंगल सुरक्षित रहें परन्तु आज शहरी मनुष्यों से न तो जंगल सुरक्षित हैं और न ही मांसाहारी पशु।

मांसाहार के कारण

मनुष्यों के द्वारा मांसाहार के मूल कारणों में एक कारण है – पंच-इन्द्रियों से अतिरिक्त सुख प्राप्त करने की वृत्ति। मनुष्य की ये इन्द्रियां (नेत्र, जीभ, कान, नाक व त्वचा) सांसारिक भोग-विलास के प्रति आसक्ति में फंस जाती हैं। देह अभिमानवश जीभ को नित्य नए-नए व्यंजन चाहिएँ अत: वह मांसाहार के प्रति आसक्ति बना लेती है। द्वापरयुग की शुरूआत में ही पांच विकारों ने सिर उठाना शुरू किया था, जिससे मनुष्य हिंसक हो गया। उसने मांसाहारी पशुओं को शाकाहारी पशुओं का भक्षण करते देख खुद भी ऐसा करना शुरू कर दिया।

शाकाहारी और मांसाहारी की शारीरिक रचना में अंतर

मांसाहारी पशुओं की शारीरिक संरचना मांस के सेवन हेतु विकसित है और मनुष्यों की दैहिक संरचना शाकाहारी भोज्य-पदार्थों के अनुरूप बनी हुई है। निम्नलिखित बातों पर ग़ौर करें तो स्पष्ट होगा कि मनुष्य को कुदरत ने मांसाहार के अनुरूप शारीरिक संरचना नहीं दी है :-

(1) मांसाहारी पशुओं के दांत लम्बे, पैने व शक्तिशाली होते हैं, जो कि मांस को चीरने-फाड़ने व भक्षण के लिए आवश्यक भी हैं परन्तु मनुष्यों के दांत काटने, चबाने व महीन करने के लिए होते हैं। इन दांतों का आकार-प्रकार, शाकाहारी फल-सब्जियों व अन्न पदार्थों के भक्षण हेतु बना होता है।

(2) मांसाहारी पशुओं की जीभ काफी खुरदरी व शक्तिशाली होती है और मनुष्यों की जीभ कोमल होती है क्योंकि उसे शाकाहारी हल्के भोजन को ही उलटना-पलटना होता है। साथ ही उसे शब्दों के उच्चारण हेतु लचीलापन व कोमलता भी चाहिए।

(3) मांसाहारी पशुओं के जबड़े मजबूत होते हैं और केवल ऊपर-नीचे हो कर मांस को चीरते-फाड़ते और काटते हैं। मनुष्यों के जबड़े हल्के व नाज़ुक होते हैं। ऊपर-नीचे के अलावा, बगल की गति भी रखते हैं ताकि भोजन को कूटा व महीन किया जा सके।

(4) मांसाहारी पशुओं की लार एसीडिक होती है, जो कि मांस के प्रोटीन को गलाने के लिए आवश्यक है। मनुष्यों की लार क्षारीय होती है जिसमें 'टायलीन' (Ptylin) तत्व होता है जो कि स्टार्च को पचाता है। मांसाहारी पशुओं की लार में टायलीन नहीं होता है।

(5) एक मांसाहारी का आमाशय एक गोल थैली के समान होता है जिसमें शाकाहारी आमाशय की तुलना में 10 गुणे से भी ज्यादा हाइड्रोक्लोरिक एसिड पैदा होता है ताकि मांस को शीघ्रता से गलाया जा सके। मांसाहारी आमाशय में भोजन को जल्दी से आगे जाना होता है, नहीं तो सड़ांध पैदा हो कर ज़हर बन जाएगा। मनुष्यों का आमाशय आयताकार या दीर्घाकार (Oblong) होता है और इससे निकली आंत कुण्डलित (Duodenum) हो कर भोजन को एकदम से आगे जाने से रोकती है। शाकाहारी भोजन से सड़ांध का खतरा नहीं होता और

हल्के एसिडिक पाचक-द्रव्य से इसे धीरे-धीरे गलाया व पचाया जाता है।

(6) मांसाहारी पशुओं की आंत की लम्बाई उनके धड़ से मात्र 3 गुणा लम्बी होती है क्योंकि मांसाहार का शरीर में लम्बे समय तक रहना नुकसानदायक है परन्तु मनुष्यों में आंत की लम्बाई उनके धड़ से 12 गुणा अधिक होती है। शाकाहारी भोजन के सारे पोषक तत्वों को आंतों के द्वारा अवशोषित करना लम्बी क्रिया है। शेर की आंत मात्र 12 फीट लम्बी होती है, मनुष्य की 30 फीट लम्बी जबकि जिराफ की आंत 280 फीट लम्बी होती है क्योंकि वह उच्च दर्जे का शाकाहारी है।

(7) मांसाहारी पशुओं में पैदा होने वाली यूरिक एसिड की मात्रा शाकाहारी मनुष्यों से 10 से 15 गुणा अधिक होती है। अत: पशुओं का लीवर बड़ी मात्रा में यूरिकेज एन्जाइम पैदा करता है, जो यूरिक एसिड को विखंडित करके मूत्र के रूप में बाहर निकालता है। मनुष्यों का लीवर यूरिकेज एन्जाइम पैदा नहीं करता क्योंकि मनुष्य के शाकाहारी भोजन से यूरिक एसिड पैदा नहीं होता। ऐसे में जब मनुष्य गलत खान-पान करता है या मांसाहार करता है, तो शरीर में यूरिक एसिड पैदा होता है। इससे निपटने के लिए शरीर को काफी ऊर्जा का व्यय करना होता है। पशुओं का मूत्र एसिडिक होता है और मनुष्यों का मूत्र क्षारीय (Alkaline) गुण का होता है। मांसाहार से मनुष्यों के मूत्र में भी दोष आ जाता है।

(8) मांसाहारी पशुओं के पैरों के पंजों में लम्बे-पैने नाखून होते हैं ताकि शिकार को काबू में कर सकें। मनुष्य के दो हाथ किसी शिकार को दबोचने के लिए नहीं परन्तु अन्य मनुष्यों की सेवा करने हेतु बने हैं। उसकी हथेली व पांच अंगुलियों की संरचना किसी फल या सब्जी को तोड़ने के लिए या अन्य उपयोगी कार्यों के लिए बनी है।

मांसाहार और शराब से उपद्रव

मांसाहार करने के बाद पशु लम्बा विश्राम करते हैं ताकि मांस को पचा सकें। उस समय वे शान्ति धारण कर लेते हैं और यदि उनके पास शाकाहारी छोटे पशु भी आ जाएं तो उनका वध नहीं करते। परन्तु मनुष्य मांसाहार के साथ शराब का भी सेवन कर लेते हैं और उपद्रव मचाते हैं। ऐसे एक व्यक्ति को पुलिस ने पकड़ कर पूछताछ की तो वह कहने लगा कि साहब मैंने शराब पी रखी थी अत: गलती हो गई। यह पूछने पर कि शराब क्यों पी थी, उसने कहा कि नॉनवेज को पचाने में शराब सहायक होती है। यह पूछने पर कि नॉनवेज क्यों खाया, वह बोला कि दोस्त के साथ दावत थी और दावत बिना नॉनवेज के थोड़े ही होती हैं। तो आज हो रही पार्टियों व दावतों से अशान्ति फैल रही है।

विकृत भोजन से मोटापा

पशुओं में मोटापा देखने में नहीं आता क्योंकि वे कुदरत प्रदत्त आहार को ही ग्रहण करते हैं परन्तु मनुष्यों के मोटापे का एक प्रमुख कारण उनका गलत खान-पान है। अन्न, फल व सब्जियों को उनके मूल रूप में ग्रहण करने की बजाए वह इनके स्वरूप को तेल व मसालों के साथ अग्नि में पका कर पहले नष्ट करता है और फिर इस विकृत मरे हुए भोजन को पेट में दफन करता है। ऐसा भोजन मल के रूप में पूरा बाहर नहीं आ पाता और मोटापे के रूप में शरीर में जगह बना लेता है।

कलियुग पराकाष्ठा पर

पशु कच्चा आहार ही लेते हैं जिससे आहार के सारे तत्व, मूल गुणों के साथ अवशोषित हो जाते हैं। मनुष्य चूंकि दूसरे पशुओं के आहार का भी भक्षण करता है अत: वैसे दांत नहीं होने के कारण पहले छूरियों से उसके छोटे-छोटे टुकड़े करता है और पेट में वैसे तेज पाचक रसायन का स्राव न होने के कारण मांस को पहले बाहर बर्तनों में ही पका लेता है। इस प्रकार वह मरे हुए मांस का भक्षण करता है जबकि मांसाहारी पशु मांस को मूल रूप में ग्रहण करते हैं। जितने भी मांसाहारी पशु हैं, वे केवल शाकाहारी पशुओं का ही भक्षण करते हैं। वे अपनी योनि वाले पशुओं का भी

भक्षण नहीं करते **परन्तु मनुष्य एक ऐसा सिरफिरा प्राणी है, जो एक से बढ़ कर एक खाद्य-पदार्थों के होते हुए भी किसी भी प्रकार के पशु का वध कर उसका भक्षण करने से गुरेज नहीं करता। यहां तक कि कुछ मनुष्य दूसरे मनुष्य का मांसाहार भी कर लेते हैं।** ताईवान व कुछ अन्य गरीब मुल्कों में गरीब महिलाओं के द्वारा 8 माह के शिशु या भ्रूण का समय से पूर्व प्रसव करा कर उसे होटलों में बेच दिया जाता है। ये होटल मानव-भ्रूण को ओवन में बेक करके ग्राहकों को नाश्ते में परोस देते हैं। उनके मीनू-कार्ड में 'रोस्टेड-एम्ब्रियो' के रेट सबसे अधिक होते हैं। यह बात रोंगटे खड़े करने वाली है परन्तु है सच। युगांडा के पूर्व राष्ट्रपति 'ईदी अमीन' अपने फ्रिज में अपने दुश्मनों का मांस, भक्षण हेतु रखता था। ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना मनुष्य के द्वारा की जा रही ऐसी हैवानियत से तो दानव भी दहल जाएं। कुछ मनुष्यों का यह घृणित कृत्य इस बात का संकेत है कि कलियुग अपनी पराकाष्ठा पर है और किसी भी समय इसकी समाप्ति हो सकती है।

हिंसा से उत्पन्न सुखों का अंत हिंसात्मक

पहले शिकार या आखेट करना एक कला या मनोरंजन का साधन माना जाता था परन्तु इससे जंगल में पशुओं की संख्या कम होती देख सरकार ने इस पर रोक लगा दी। जब एक मनुष्य जंगल में किसी पशु का शिकार करता था, तो उसे बहादुर माना जाता था लेकिन अब, जब कोई पशु किसी मनुष्य को मार देता है, तो उसे पागल, आदमखोर या खतरनाक बतला कर उसका वध कर दिया जाता है। आज जंगली मांसाहारी पशुओं की जाति विलुप्त होने का खतरा हो गया है अत: सरकार इनकी सुरक्षा के उपाय कर रही है। परन्तु जिस प्रकार से शहरों में कमेले (slaughter house) बना कर गाय-भैंस, बकरे व अन्य पशुओं की हत्या की जा रही है और उनके मांस का खुलेआम भक्षण किया जा रहा है, उससे मनुष्य की क्रूरता का पता पड़ता है। यह भूलना नहीं चाहिए कि हिंसात्मक सुखों का अन्त भी हिंसात्मक होता है। आज अनेक ऐसे पशु हैं जिनको बांध कर रखा जाता है, जैसे कि गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, ऊंट इत्यादि। ऐसा करना भी हिंसा है। मनुष्य समझते हैं कि पिंजरे में बंद किया गया पक्षी गाता है परन्तु वास्तव में वह चिल्लाता है। लंबे समय तक बंद पक्षी को यदि मुक्त कर दिया जाए तो वह उड़ नहीं पाता, उसके पंख शक्तिहीन हो जाते हैं। उसी प्रकार लंबे समय से अज्ञानता के पिंजड़े में बंद मनुष्यों की सद्-विचार शक्ति भी शक्तिहीन हो गयी है और वे आध्यात्मिक ज्ञान के आकाश में उड़ नहीं पा रहे हैं।

सही वितरण के अभाव में भूखमरी

विश्व में शाकाहारी खाद्य पदार्थों के मुख्य स्रोत हैं फल, सब्जी, अन्न, दलहन इत्यादि। पूरे विश्व में इनकी इतनी पैदावार है, जो कि 700 करोड़ मनुष्यों को पर्याप्त हो परन्तु इनका वितरण सही न हो पाने के कारण कुछ देशों में मनुष्य भूखे भी रह जाते हैं। इसके साथ ही विश्व में मांसाहारी पशुओं के लिए भी पर्याप्त शाकाहारी जीव-जन्तु हैं परन्तु मांसाहारियों की संख्या कम होती जा रही है। कारण यह है कि मनुष्यों ने उनके भोजन यानि बकरी, हिरण, खरगोश इत्यादि को अपने भोजन में शामिल कर लिया है और मांसाहारी पशुओं का शिकार उनकी खाल, दांत आदि के लिए कर रहे हैं। कई बार मांसाहारी पशु जंगल से लगे गांवों में आ कर मनुष्यों का शिकार कर लेते हैं। इसका कारण है जंगल में शाकाहारी पशुओं की कमी, जिससे मांसाहारी पशुओं को भूखों मरने की नौबत आ जाती है। अत: वे मजबूरन आदमखोर हो जाते हैं। पृथ्वी पर कुदरत-प्रदत्त आहार के सन्तुलन को मनुष्य ने नष्ट कर दिया है। यह केवल मनुष्य ही है, जो अपने भोजन को सिर उठा कर खाता है जबकि

अन्य जीव-जन्तु सिर झुका कर खाते हैं। वही मनुष्य पूजा करते हुए सिर झुकाता है, जो कि श्रद्धावश नहीं बल्कि लज्जित होने का प्रतीक है जबकि पशु-पक्षी अन्यथा कहीं सिर नहीं झुकाते।

प्रकृति स्वतः करती है जनसंख्या नियंत्रण

मांसाहारी व्यक्ति यह दलील देते हैं कि यदि पशुओं का मनुष्य भक्षण न करें, तो पशुओं की जनसंख्या इतनी बढ़ जाएगी कि मनुष्यों का जीवन भी अस्त-व्यस्त हो जाएगा। यह बात मांसाहारी वृत्ति को जायज़ ठहराने का थोथा प्रयास मात्र है। इस धरा पर पल रहे सभी प्राणियों की जनसंख्या का नियंत्रण तो प्रकृति स्वतः करती रहती है। कई प्रकार की बीमारियां व प्राकृतिक आपदाएं कुछ विशेष प्रकार के प्राणियों की जनसंख्या घटा देती हैं। देखा गया है कि जितना बड़ा जलाशय होता है उसी के अनुपात में मछलियों की संख्या व मछलियों का आकार होता है। छोटे जलाशय में इनकी संख्या कम व आकार भी छोटा होता है। समुद्र में मछलियों की संख्या भी काफी अधिक व आकार भी बड़ा होता है। तो इस पृथ्वी पर जितनी जगह है, उसी के अनुपात में प्रकृति विभिन्न प्राणियों की जनसंख्या का नियंत्रण स्वतः करती रहती है।

सुख व शान्ति की प्राप्ति में मांसाहार व अनाचार-कामाचार ये दो बड़ी मुख्य रुकावटें हैं। जितने भी श्रेष्ठ सन्त, महात्मा व योगी-तपस्वी हुए हैं, उन्होंने इन दो बातों को जान कर इनका त्याग किया था। आइए, हम भी शाकाहारी जीवन को अपना कर सुख-शान्ति की प्राप्ति की तरफ बढ़ चलें। यदि हम शाकाहारी हैं, तो हम पवित्र व सदाचारी बन सकते हैं और पवित्र व सदाचारी हो कर ही हम मनुष्य कहला सकते हैं। सुख व शान्ति की प्राप्ति के लिए मनुष्य बनना पहली शर्त है। ❖

दो करोड़ घरों तक पहुँचा पीस ऑफ माइंड चैनल

आप सबको हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि परमात्मा का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए बाबा ने अपना चैनल दिया है जिसमें 24 घंटे मधुबन मुख्यालय सहित देश-विदेश की सेवाओं के समाचार, अवेकनिंग विद् ब्रह्माकुमारीज़, तनावमुक्त जीवन शिविर सहित राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के पूरे कार्यक्रम दिखाये जाते हैं जिसमें परमात्मा का संदेश प्रसारित हो रहा है। पहले यह केवल रिलायंस डीटीएच पर ही देखा जाता था परंतु अब यह सेटेलाइट के द्वारा भी उपलब्ध हो गया है जिसे आप घर बैठे केबल नेटवर्क के द्वारा देख सकते हैं। आप अपने केबल ऑपरेटर से विनम्र आग्रह कर इस चैनल को प्रारंभ करवा सकते हैं।

इसकी फ्रीक्वेंसी नीचे दी जा रही है:-

"C" Band with MPeg4 Receiver, Frequency-4054
Symbol-13230, Polarisation - Horizontal,
Satellite - INSAT - 4A
Enquiry: 09549991111, 08104777111, 08104777222
कार्यालय का पता:- पीस ऑफ माइंड चैनल, शांतिवन, तलहटी, आबू रोड, राजस्थान, पिन कोड- 307510

खुदा के नेक बंदे

– डॉ.शरद नारायण खरे

बन गये हम अब, ख़ुदा के नेक बंदे।
बैर सारा तज दिया है, प्रेम मन में भर लिया है।
क्रोध, माया को हटाकर, नेहमय सब कर लिया है।
बाहर निकल आये हैं हम, काटकर सभी फंदे।

जीवन-मुक्ति भाने लगी है, आत्मा सुख पाने लगी है।
सुनते हैं जो नित्य मुरली, ज्ञान बरसाने लगी है।
अब अनीति, कपट, मोह के, हमने तज दिये सभी धंधे।

ब्रह्मा बाबा प्यार देते, हर कदम आलोक देते।
दूर कर सारे तिमिर को, भाईचारा भाव देते।
अब बाबा के प्यार से, मज़बूत हो गये हमारे कंधे।

रूहानी जादूगर

● कुमारी रंजना, रेनुकूट, सोनभद्र

मैं कभी-कभी छुट्टियों में चुनार में अपनी नानी के यहाँ जाती हूँ। नाना, नानी ओम शांति की पाठशाला चलाते हैं। क्लास रूम में कई पुस्तकें जैसे जीवन हीरे तुल्य कैसे बने, सत्यनारायण की सच्ची कथा, ज्ञानामृत पत्रिकायें आदि रखी रहती हैं और दीवारों पर ढेर सारे आध्यात्मिक चित्र लगे हैं। बाबा के गीत सुनते-सुनते तो मन एकदम शांत हो जाता है। मैं अपने साथ पुस्तकें तथा ज्ञानामृत पत्रिकायें ले आई हूँ। पढ़ाई से समय मिलता है तो इन्हीं पुस्तकों को पढ़ने से मन की सारी उलझनें समाप्त हो जाती हैं तथा मन ही मन शिवबाबा के प्रति काफी स्नेह बना रहता है। इस प्रकार, मैं शिव पिता परमात्मा को अपने रक्षक के रूप में मानने लगी। किसी भी कार्य में सबसे पहले दिल से कहती, शिवबाबा मेरी सहायता करना।

मैं बाबा को पुकार रही थी

सात नवंबर, 2011 सायं 6 बजे एक घटना घटी। मैं अपने निवास से ट्यूशन के लिए निकली ही थी कि अचानक बगल में काले रंग की मारुति रुकी, तुरंत दो व्यक्ति पीछे वाली सीट से बाहर निकले, एक आदमी ने मेरा मुँह अपने हाथों से बंद किया और मारुति में डाल दिया। तुरंत मारुति चल पड़ी। कुछ दूर निकल जाने के बाद कपड़े से मेरा मुँह बाँध दिया गया और मेरे दोनों तरफ कट्टा हाथ में लेकर दो व्यक्ति बैठ गये। चारों अपहरणकर्त्ता मुँह पर कपड़ा बाँधे थे और मारुति का शीशा काला था। एक बार रास्ते में मुझसे एक अपहरणकर्त्ता ने कहा कि तुम्हारे मम्मी-पापा से पैसा लेना है, नहीं तो तुम्हें जान से मार देंगे। मेरी आँखों से बराबर आँसू गिर रहे थे पर दिल से बाबा को पुकार रही थी और बार-बार दिल से कहती, बाबा मेरी रक्षा करो, रक्षा करो, रक्षा करो। पूरे 6 घंटे के बाद मारुति रुकी। मुँह बंद करने के बाद उन्होंने मेरा मोबाइल स्वीच ऑफ कर दिया था।

मैं शीशा तोड़कर भाग निकली

गाड़ी के रुकने पर चारों अपहरणकर्त्ता गाड़ी को लॉक करके होटल में खाना खाने चले गये। मैंने तुरंत सीट के नीचे पड़े अपने मोबाइल से अपनी स्थिति की खबर रेनूकूट भेजी। मेरी माता ने कहा, बेटी, गाड़ी में देख लो, कोई लोहा हो तो उससे आगे का शीशा तोड़कर भाग जाओ। जितना भाग सको भागो फिर किसी सुरक्षित स्थान में छिप जाना। मुझे गाड़ी की सीट के नीचे लोहे की राड़ मिली। शीशा तोड़कर मैं भाग निकली। भागते-भागते मैं बनारस लंका पर जहाँ मुर्दों के लिए कफन बिकते हैं, पहुँची। सामने एक विधवा बुढ़ी माता सब्जी बेचने के लिए बैठी थी। मैंने उसके पैर पकड़ कर रोते हुए कहा, माँ, मुझे बचा लो। मुझे अपहरणकर्त्ता रेनूकूट से अपहरण करके लाये हैं। मैं मारुति का शीशा तोड़कर भाग आई हूँ, वो सब होटल में खाना खाने गये हैं। उस माता ने तुरंत मुझे अपनी ट्राली पर लिटाकर, अपना कंबल ओढ़ा दिया और ट्राली के पास रखी स्टूल पर बैठकर सतर्कता से सड़क देखने लगी। करीब एक घंटे बाद कहने लगी, अब तुम निश्चिंत हो जाओ और अपनी मम्मी-पापा को फोन कर दो कि मैं बनारस लंका पर निर्मला नाम की माता के पास सुरक्षित हूँ, मुझे जल्दी से आकर ले जाइये।

माताजी ने पैसे लेने से मना कर दिया

इसके बाद मेरे पापा जी ने तुरंत हमारे मामा अनुराग सिंह को फोन किया और सारी घटना बताते हुए कहा कि जल्दी से जल्दी बनारस लंका पर जाइये और उसे अपने क्वार्टर पर लेकर आइये, हम लोग आ रहे हैं। मेरे मामा मोटर साइकिल

से वहाँ पहुँच गये जहाँ मैं थी। उन्होंने निर्मला माता को बहुत धन्यवाद किया और कहा कि माताजी, आज आपने माँ दुर्गा के रूप में मेरी भांजी रंजना को भेड़ियों से बचा लिया। आपका जितना भी धन्यवाद करूँ, कम है। फिर भी आप सौ रुपये रख लीजिये, चाय-नाश्ता कर लीजियेगा परंतु माताजी ने पैसे लेने से मना कर दिया तथा कहा कि मैं मजदूरी जरूर करती हूँ परंतु संवेदनाहीन नहीं हूँ। विपत्ति से इसे मैंने अपनी बिटिया समझकर बचाया है। यदि भूखे भेड़िये आक्रमण भी करते तो मैं जान पर खेलकर भी लड़की को बचा लेती।

बाबा ने गोद में ले लिया था

मामा मुझे लेकर अपने क्वार्टर आ गये, तब तक मम्मी-पापा और अन्य लोग भी पहुँच गये थे। बाबा के रूहानी जादू ने मुझे बचा लिया। जब मुझे मम्मी-पापा मिले तो मैं निहाल हो गई। जब कोई पूछता है कि तुम कैसे बच गई, तो यही कहती हूँ कि रूहानी जादूगर बाबा ने मुझे अपनी गोद में ले लिया था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन भेड़ियों ने मुझे टच तक नहीं किया। बाबा ने उनकी ऐसी बुद्धि बदल दी थी कि मेरा ही मोबाइल, मेरी ही सीट के नीचे रख दिया था जिसके आधार से बाबा ने मुझे बचा लिया और मैं बाबा के पास आ गई। अब तो दिल से यही निकलता है, मेरी तकदीर की तस्वीर बनाने वाले तुझे दिल याद करे। ❖

मन का इलाज

ब्रह्माकुमार नीरज, हिसार

आज का मनुष्य तन की जगह मन से ज्यादा भाग रहा है। सुबह से रात तक न जाने कितने व्यक्तियों में, वस्तुओं में, संबंधों में अपने मन को व्यस्त करता है और रात तक अपने को थका हुआ और परेशान-सा पाता है। कारण क्या? जैसे आज पूरा विश्व मंदी के दौर से गुजर रहा है, बड़े-बड़े बैंक, सेल काउंटर या तो घाटे में चल रहे हैं या दिवालिया होकर बंद हो चुके हैं। स्पष्ट कारण है कि खर्चा ज्यादा है और आमदनी कम। उसी प्रकार आज का मनुष्य भी सुबह से रात तक कितने ही व्यक्तियों, वस्तुओं, संबंधों में अपनी ऊर्जा खर्च तो कर रहा है लेकिन उसके एवज में प्राप्ति नहीं हो पा रही है। प्राप्ति से अभिप्राय है जीवन में सच्चा सुख, शांति, चैन, आनंद। केवल खर्चा ही खर्चा है और उसमें भी ज्यादा ऊर्जा व्यर्थ संकल्पों में खर्च कर रहा है।

सीधी-सी बात यह है कि मनुष्य का मन पर नियंत्रण नहीं रहा है, मन को रोगी बना बैठा है। शरीर के अलग-अलग अंगों का इलाज करने वाले अनेक डॉक्टर तो मिल जायेंगे लेकिन कहीं भी ऐसा बोर्ड लगा नज़र नहीं आता जहाँ पर लिखा हो कि हमारे यहाँ पर मन का इलाज किया जाता है। इसलिए प्रश्न उठता है कि खर्च की गई ऊर्जा आखिर प्राप्त होगी कहाँ से तथा मन पर नियंत्रण पायेंगे कैसे और मन को निरोगी बनायेंगे कैसे? तो इन सबका स्रोत है परमपिता परमात्मा लेकिन परमात्मा की सही पहचान न हो पाने के कारण हम भटक रहे हैं और दूसरी तरफ एक अद्‌भुत घटना घट चुकी है। अब परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित होकर सभी जीवात्माओं को निमंत्रण दे रहे हैं कि अब अज्ञानता की गहरी नींद से जागो और अपना खर्च कम करो अर्थात् जगह-जगह मन और बुद्धि को व्यर्थ में न फँसाकर अपना मन मेरे में लगाकर शीघ्र ही अपने भाग्य का सितारा चमकाओ, नहीं तो अंत में पछताना पड़ेगा। आज ही अपने नज़दीकी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाकर ऊपर बताये अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर लें। गायन है ना, अब नहीं तो कभी नहीं। कहीं ऐसा पश्चाताप न करना पड़े कि भगवान आकर चला भी जाये और हमें मालूम ही न पड़े। ❖

गतांक से आगे

गीता सार

● ब्रह्माकुमार डॉ.रामश्लोक, शान्तिवन

पाँचवां दृश्य

(विद्वानों की ज्ञान-गोष्ठी, स्टेज पर 4-5 विद्वान बैठे हैं। वे सभी ज्ञान वार्तालाप कर रहे हैं)

महामहिम व्याकरणाचार्य हर्षिदानन्द स्वामी – पुनः मेरे प्रिय सहयोगियो, आज सारे भारत में महाभारत की वास्तविकता की सनसनी पूर्ण खोज बड़े जोर-शोर से चल रही है। प्रोफेसर, रिसर्च स्कालर इस बात की खोज कर रहे हैं कि महाभारत और गीता एक सच्ची ऐतिहासिक घटना है या एक रूपक। आज हमने भी यह गोष्ठी रखी है जिसमें हम गीता के संबंध में कुछ विचार-विमर्श करेंगे। क्यों नहीं हम सब मिलकर इसकी वास्तविकता को विश्व के सामने रखें।

एक विद्वान – हाँ क्यों नहीं। यह हमारा ही कर्त्तव्य है कि हम इन सभी गुत्थियों को सुलझा कर विश्व के सामने रखें।

(डॉ. हरीश का प्रवेश)

हरीश – नमस्कार हो सभी महान विभूतियों को।

हर्षिदानन्द – नमस्कार डॉ.हरीश, आइये, आपकी यात्रा कैसी रही?

हरीश – बहुत अच्छी। आपकी ज्ञान-गोष्ठी का निमंत्रण पाते ही मैं फौरन रवाना हो गया।

हर्षिदानन्द – अच्छा तो कार्यक्रम प्रारंभ किया जाये। आज हम पहले विचार करेंगे कि गीता ज्ञान कब दिया गया।

दूसरा विद्वान – यह तो बहुत सहज बात है, गीता का ज्ञान महाभारत युद्ध से पहले द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था। इसमें तो कोई शंका की बात ही नहीं।

हरीश – लेकिन क्या आपने कभी इस श्लोक को गहराई से सोचा 'यदा यदाहि धर्मस्य ...'।

पहला विद्वान – क्यों नहीं, यह तो सर्वविदित है कि धर्मग्लानि के समय स्वयं भगवान अवतार लेकर अधर्मियों का विनाश और सत्य धर्म की पुनर्स्थापना करते हैं।

हरीश – परंतु द्वापर में भगवान ने आकर महाभारत युद्ध द्वारा अधर्म का विनाश करा दिया।

दूसरा विद्वान – हाँ, सभी अधर्मी, कौरव समाप्त हो गये।

हरीश – परंतु इससे सत्य धर्म का उत्थान तो नज़र नहीं आता। बाद में तो कलियुग प्रारंभ हो गया। फिर भगवान ने धर्म की रक्षा कैसे की?

तीसरा विद्वान – नहीं, नहीं, भगवान ने तो धर्म पर चलने वाले पांडवों की रक्षा की।

हरीश – परन्तु फाइनल रिजल्ट क्या हुआ? संसार तो पतन की ओर ही चला गया, भगवान के अवतरण के बाद भी ऐसा क्यों?

पहला विद्वान – यह तो सृष्टि का क्रम है, द्वापर के बाद कलियुग ही आयेगा। उसमें धर्म भी घटकर एक पाद ही रह जाता है।

हरीश – तो फिर बीच में भगवान के आने का क्या प्रयोजन? उसे तो कलियुग के अंत में आना चाहिए जब धर्म पूर्णतया समाप्त हो जाये।

दूसरा विद्वान – हाँ, तब भी आता है। उसके तो 24 अवतार हैं।

हरीश – परंतु मुझे यह बात समझ में नहीं आई कि 4 युगों में 24 बार आने की क्या आवश्यकता है। क्या 24 बार धर्म की ग्लानि हुई? सतयुग में जहाँ धर्म के 4 पाद हैं, त्रेता में 3 पाद हैं, वहाँ धर्मग्लानि कैसी? धर्मग्लानि तो कलियुग में ही होनी चाहिए।

तीसरा विद्वान – *(सभी विचार करते हैं)* बात तो विचारणीय है।

हरीश – गीता और महाभारत के संबंध में मेरे कुछ प्रश्न हैं, वो मैं आपके समक्ष रखना चाहता हूँ।

हर्षिदानन्द – अवश्य, आज हम इसीलिए तो बैठे हैं।

हरीश – सर्वप्रथम तो यह बात है कि गीता में जिन पात्रों का मुख्य स्थान है, जैसे व्यास, संजय, अर्जुन आदि या महाभारत के अन्य पात्र, इन सभी के जन्म की कथा तो आपको मालूम ही है।

पहला विद्वान – हाँ, व्यास की माता का जन्म मछली से, अर्जुन का जन्म इंद्र के वरदान से, कौरवों का जन्म भी घड़ों से, किसी का जन्म सरकण्डों से, इस प्रकार सभी के जन्मों की भिन्न-भिन्न गाथायें हैं।

हरीश – ये सभी बातें क्या आपको ऐतिहासिक और यथार्थ मालूम होती हैं? क्या किसी का जन्म बड़ी आयु में हो सकता है? क्या जन्म लेते ही कोई तपस्या के लिए चल सकता है? तो जब प्रारंभ ही मनगढंत प्रतीत होता है तब ग्रंथ की सत्यता को कैसे स्वीकार किया जाये?

दूसरा विद्वान – डॉ.साहब, उस समय ऐसे-ऐसे ऋषि मौजूद थे जो वरदानों द्वारा ये कार्य कर सकते थे, जो आज असंभव प्रतीत होते हैं।

हरीश – अगर उस समय ऐसे ऋषि थे और धर्म में इतनी शक्ति थी कि मनुष्य देवताओं का आह्वान कर सकें तब भला उस समय को धर्मग्लानि का समय क्यों कहा गया? क्या ऐसे जन्म हो सकते हैं?

तीसरा विद्वान – *(विचार करते हुए)* प्रश्न तो आपका तर्कयुक्त है परन्तु ऐसा ही वर्णन महाभारत में आया है। अगर हम उन्हें असत्य मान लें तो संपूर्ण गीता-महाभारत ही कल्पना मात्र रह जायेगी।

हरीश – नहीं, कल्पना तो नहीं कहेंगे परंतु जो असत्यता इसमें आ गई है उसे तो दूर करना ही पड़ेगा, कहाँ तक हम अंधश्रद्धा के वश चलते रहेंगे?

विद्वान – हाँ, हम सभी मिलकर इसका कुछ निष्कर्ष निकालें।

हरीश – इसी प्रकार दूसरी भी बात है। गीता के प्रारंभ से ही यह स्पष्ट है कि व्यास ने संजय को दिव्य दृष्टि का वरदान दिया था जिससे उसने महल में बैठकर ही सारा युद्ध का दृश्य देखा और धृतराष्ट को सुनाया।

दूसरा विद्वान – हाँ, यही सत्यता है।

हरीश – परन्तु महाभारत में वर्णित भगवद्‌गीता पर्व से स्पष्ट होता है कि संजय युद्ध के मैदान में जाता था और आकर सारा समाचार धृतराष्ट्र को सुनाता था।

तीसरा विद्वान – हाँ, भगवद्‌गीता पर्व में स्पष्ट लिखा है कि संजय युद्ध क्षेत्र से आये और उन्होंने धृतराष्ट्र को कहा कि 10 दिन भीष्म की वीरता के दृश्य देखकर वापिस लौटे हैं और आज भीष्म बहुत से पांडव योद्धाओं को खेतकर वीरगति को प्राप्त हुए हैं।

पहला विद्वान – इसी पर्व में लिखा है कि संजय को पांडवों के एक जनरल सात्यकी ने पकड़ लिया और रथ से बाँध दिया और संजय पर हमला हो रहा था कि ठीक समय पर व्यास ने आकर उन्हें छुड़ाया।

हरीश – अभी आप खुद ही विचार करें कि संजय में ही स्पष्टता नहीं तो उस द्वारा वर्णित गीताज्ञान में कितनी सत्यता होगी।

दूसरा विद्वान – *(सभी विचार करते हैं)* हाँ महाभारत में कहीं-कहीं विरोधाभास हो गया। ये सभी लेखकों की कमज़ोरियाँ रही होंगी।

हरीश – इन सबसे भी मज़ेदार बात तो यह है कि अश्वमेध पर्व में लिखा है कि युद्ध के बाद द्वारिका को जाने से पूर्व एक बार अर्जुन ने श्रीकृष्ण को कहा कि आपने युद्ध क्षेत्र पर जो योग मुझे सिखाया था उसे मैं चित्त की चंचलता के कारण भूल गया हूँ अत: उसे फिर से सुनने की इच्छा है। इस पर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा, मैंने तुम्हें अत्यंत गोपनीय धर्म का उपदेश दिया था किंतु मंदबुद्धि होने से तुमने उसे धारण नहीं किया और आज वह उपदेश मुझे भी याद नहीं है। अब बोलिये, इससे क्या समझा जाये? श्रीकृष्ण भी भूल गये, अर्जुन भी भूल गये। बाकी याद किसे रहा होगा? तो बताइये लिखने में कितनी भूलें हुई होंगी?

तीसरा विद्वान – हरीश, आपने तो ऐसी बात खोज निकाली जिसका कोई उत्तर ही समझ में नहीं आता।

सचमुच ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी ग्रंथ बहुत प्रक्षिप्त हो गये हैं। इनसे सत्यता निकालना बड़ी टेढ़ी खीर है।
हरीश – इसी प्रकार गीता में भी बहुत विरोधाभास नज़र आता है। हमें बहुत मेहनत करनी होगी और मिलकर यह कार्य पूरा करना होगा।

(पर्दा गिरता है)

हरीश – *(अपने आप से)*
मेरे प्रश्न सुनकर सभी चुप तो हो जाते हैं परंतु समाधान कोई भी नहीं कर पाता, अब मुझे क्या करना चाहिए। हे प्रभु, तुम ही बताओ, मैं क्या करूँ या एक बार तुम ही फिर से आकर इन गुत्थियों को सुलझा जाओ, नहीं तो मानवता तो दिनों-दिन पतन के गर्त में गिरती चली जा रही है। *(फिर अपने को धीरज देते हुए)* खैर, निराश होने की बात नहीं, मैं अवश्य ही इनका समाधान खोज निकालूँगा.. *(चलता जाता है)* **(क्रमश:)**

बाबा सर्जन की कमाल

● **ब्रह्माकुमारी पुष्पा, आगरा**

मेरी बड़ी बेटी नीरज व दामाद मुकेश जी हमसे पहले ज्ञान में आये थे। जब मैं उनके साथ पहली बार ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर गई तो मैंने गहन शांति का अनुभव किया। मुझे लगा, जीवन है तो इन बहनों का है। मैंने उसी दिन निश्चय कर लिया कि मुझे भी ईश्वरीय ज्ञान को धारण करना है । कुछ दिनों बाद बहनों द्वारा सात दिन का कोर्स मेरे घर पर ही मुझे कराया गया। प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा द्वारा घर में ही गीता पाठशाला शुरू करा दी। एक साल बाद मैं पिता परमात्मा से मिलने माउण्ट आबू (मधुबन) पहुँची । मधुबन तपोभूमि में मन आनन्द विभोर हो उठा। प्यारे पिता परमात्मा से मिलकर जन्म-जन्म की प्यास बुझ गयी, मैं आत्मा भरपूर हो गई।

उसके उपरान्त मेरे कर्मों के हिसाब-किताब शुरू हो गये। शरीर के कर्मभोग द्वारा परीक्षा शुरू हुई, बीमारी बढ़ती गई, लाखों रुपये खर्च हो गये । आगरा के बड़े-बड़े डॉक्टरों का इलाज चला किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ और ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट दिल्ली में मुझे रैफर कर दिया गया। वहाँ से भी डॉक्टरों ने जवाब दे दिया कि यह नहीं बच सकती है। इसके पश्चात् बड़ी बेटी ने, दामाद ने, छोटी बेटी पूनम ने सबने मुझे हिम्मत दिलाई कि सर्जनों का सर्जन हमारे साथ है, आपको कुछ नहीं होगा। सारे परिवार ने बाबा से खूब योग लगाना शुरू किया। आश्चर्यजनक तरीके से धीरे-धीरे मेरी बीमारी दूर होने लगी और मैं योग के माध्यम से पूर्ण स्वस्थ हो गई। बाबा की सेवा भी शुरू कर दी।

इसके बाद एक दुर्घटना में मेरी आठ पसलियाँ टूट गयीं, कंधा व हाथ भी टूट गये। डॉक्टरों ने फिर जवाब दिया कि हमारे बस की बात नहीं है लेकिन मुम्बई के डॉ.बी. मिश्रा ने मेरा ऑपरेशन किया और कहा कि मुझे नहीं पता, ये कैसे सफल हो गया। डॉ. ने कहा कि ऑपरेशन तो हो गया है लेकिन छह महीने तक बिस्तर से खड़ी नहीं हो सकेंगी। इस दुर्घटना के समय मैं बेहोश हो गयी थी, ऑपरेशन के समय डॉक्टरों ने भी मुझे बेहोश कर दिया। डबल बेहोशी के बावजूद जैसे ही ऑपरेशन शुरू हुआ, मुझे होश आ गया, मेरे ऊपर तीन सुनहरे रंग की लाईट आयी और थोड़ी देर बाद वो लाईट का गोला बन गई। परमपिता परमात्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप शिवबाबा से मेरी मुलाकात हुई और उनसे मैं बातें करने लगी। डॉक्टर भी आश्चर्यचकित होकर कहने लगे कि इसको तो हमने बेहोश कर दिया था, फिर भी मुस्कराते हुए बातें कर रही है, यह कैसे संभव है। लेकिन उन्हें नहीं पता चला कि मेरा साथी परमात्मा, साथ निभाने व कष्ट हरने आ गया है। केवल दो महीने में ही बिस्तर से खड़ी होकर मैं प्यारे बाबा की सेवा में जाने लगी। सभी लोग अचम्भा करने लगे। इस प्रकार प्यारे शिव बाबा ने मुझे दो बार नया जीवन दिया है। उसी की कमाल है। वही सर्जनों का सर्जन है। नव जीवन देने वाले व सच्ची खुशियाँ प्रदान करने वाले प्यारे शिव बाबा को करोड़ों बार शुक्रिया। ❖

सच्चे का साथी शिवबाबा

● ब्रह्माकुमार रामसिंह, अलीगढ़

मेरा लौकिक जन्म अलीगढ़ जनपद के ग्राम मलिकपुरा में ऐसे परिवार में हुआ जहाँ जुआ खेलना, माँस खाना, शराब का सेवन व धूम्रपान करना सदा चलता रहता था। एक दिन स्कूल में संत तुलसीदास की कहानी सुनकर मेरे मन में परमात्म प्राप्ति की लालसा सच्चे दिल से लगी, भक्ति आरंभ की परंतु सच्चा मार्ग किसी ने नहीं बताया। मैं परमात्म प्यार के लिए भक्ति में भटकता रहा।

विद्यालय में प्रवेश का निमंत्रण

भक्ति से छुड़ाने के लिए घरवालों ने मेरी शादी करा दी। शनै-शनै विकार बढ़ने लगे और चरम सीमा पर पहुँच गये। एक दिन अश्वनी मंदिर, सासनी गेट के मेले में दिल्ली के एक बी.के.भाई व दो श्वेत वस्त्रधारी बहनों से मुलाकात हुई। भाई जी ने अपना पता मुझे दिया तथा मेरा पता भी नोट कर लिया। कुछ दिन बाद उन्होंने एक पत्र के साथ दो पुरानी ज्ञानामृत पत्रिकायें भेजी। पत्र में लिखा, आप ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रवेश लें। मैने पत्रोत्तर द्वारा पूछा, भाई जी, प्रवेश की शर्ते क्या हैं, आयु सीमा एवं शुल्क क्या है? विद्यालय कहाँ पर है? मैं तो परिवार वाला हूँ तथा सरकारी नौकरी भी कर रहा हूँ। भाई जी ने पत्रोत्तर भेजा, आयु सीमा कुछ नहीं, नि:शुल्क प्रवेश, आपके शहर में विष्णुपुरी में यह विद्यालय स्थित है।

प्रथम दिन बाबा पर निश्चय

उस समय मैं डाकघर में डिलीवरी सहायक के पद पर कार्यरत था। एक पत्रवाहक भाई वहाँ जाते थे, उन्हीं के साथ मैं भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में पहुँच गया। वहाँ पर मेरी मुलाकात उन्हीं श्वेत वस्त्रधारी बहनों से हुई जो अश्वनी मंदिर, सासनी गेट पर मिली थी। दैवी बहनों ने मुझे बड़े आदर के साथ बिठाया, एक गिलास पानी पीने को दिया, मुझे बहुत शांति का अनुभव हुआ। इसके बाद बहनजी ने पहला पाठ 'आप कौन हैं' अर्थात् आत्मा का पाठ पढ़ाया। उसी दिन से शिवबाबा पर निश्चय बैठ गया। उसी पल उसी क्षण मैं बाबा का बन गया तथा सभी विकारों से मुक्ति मिल गई।

माया का वार और मुक्ति

शाम को जब मैं अपनी ड्यूटी समाप्त करके घर पहुँचा तो बेहद की खुशी में था जैसेकि मुझे कारून का खज़ाना मिल गया हो। मेरी युगल ने मोहल्ले की माताओ-बहनों को सुनाया तो उन्होंने कहा, घर बर्बाद हो जायेगा, जाने से रोको। युगल ने उसी दिन ज्ञानामृत के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन टुकड़ों को लिफाफे में रखकर बहनजी को दिखाया तो बहनजी बोली, ऐसा तो होता ही है, घबराओ नहीं। एक वर्ष तक युगल, लोगों के बहकावे में आकर विघ्न डालती रही। अठारह जनवरी को सेवाकेन्द्र पर ब्रह्मा भोजन था। मैंने युगल से कहा, बहनजी ने निमंत्रण भेजा है कि अपनी युगल सहित आओ। वे तैयार हो गई तथा ब्रह्मा भोजन करने के बाद उन्होंने मुझे आश्रम जाने की स्वीकृति दे दी। अनुभव का सार यही है कि सच्ची लगन हो तो परमपिता परमात्मा सबकी सुनते हैं। ❖

समय बदलने से शुभ संकल्प बदल जाता है। इसे बदलने न दें।

आध्यात्मिकता के प्रति अजब दीवानगी है पश्चिम में

● **ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत**

जुलाई-अगस्त, 2012 में मेरा छः सप्ताह की यात्रा पर यूरोप और मध्य पूर्व के देशों में बाबा की सेवार्थ जाना हुआ। यात्रा के दौरान बाबा ने बहुत सुन्दर अनुभव कराये। सभी भाई-बहनों से मिलकर ऐसे ही लगा जैसेकि वे ईश्वरीय ज्ञान की प्यासी आत्माएँ हैं। भले ही उनकी भाषा भिन्न, संस्कृति अलग, खान-पान अलग, इन सबके बाबजूद परमात्मा के प्रति उनकी अटूट भावना देखी।

मेरा पोलैण्ड, फिनलैण्ड, आइसलैण्ड, हॉलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, ग्रीस, हंगरी, तुर्की, दुबई और कतर आदि देशों में जाना हुआ। सभी स्थानों पर सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किये गये, रेडियो टॉक हुए, क्लबों में कार्यक्रम हुए, युवाओं हेतु कार्यशालाएँ हुईं, साथ-ही-साथ बी.के. भाई-बहनों के लिए भी स्व-उन्नति के क्लासेज़ हुए। सभी कार्यक्रमों में प्रश्नोत्तर तथा कॉमेन्ट्री द्वारा योग अभ्यास भी कराया गया। प्रस्तुत हैं चुने हुए कुछेक प्रश्न और उनके उत्तर –

प्रश्न : पोलैण्ड में एक वैज्ञानिक ने पूछा कि 21 दिसम्बर, 2012 के बाद दुनिया का क्या होगा?

उत्तर: आज संसार के हालात दिनोंदिन खराब होते जा रहे हैं, 21 दिसम्बर तो क्या, कभी भी कुछ भी हो सकता है। हम भविष्य के विषय में अधिक न सोचकर वर्तमान पर ज़्यादा ध्यान दें। अपनी सोच को सकारात्मक बनायें। अपनी कमी-कमज़ोरियों को मिटा कर, दैवी गुणों की धारणा करके स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायें। हम इंतज़ार करने वाले नहीं, इंतज़ाम करने वाले बनें अर्थात् अपनी मानसिक अवस्था को मज़बूत बनायें तो अवश्य ही जो भी होगा, अच्छा ही होगा, कल्याणकारी होगा।

प्रश्न : फिनलैण्ड में एक विद्यार्थी ने पूछा, जो व्यक्ति हमारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनके प्रति बदला लेने की और उन्हें सबक सिखाने की प्रबल इच्छा बनी रहती है जो मन को अशान्त करती रहती है, क्या करें?

उत्तर: हमें सर्वप्रथम कर्म-सिद्धाँत को समझने की आवश्यकता है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। आज वह व्यक्ति मेरे साथ ही अभद्रता क्यों कर कर रहा है? अवश्य ही मेरा कोई कर्मों का हिसाब उसके साथ है। यदि आप शांत रहते हैं, उस व्यक्ति को क्षमा कर देते हैं तो समझिये, आपका हिसाब चुक्तू हो गया। यदि बदला लेने की भावना आई तो नया एकाउण्ट खुल गया। अब आपको स्वयं ही निर्णय करना है कि आप क्या चाहते हैं? जब भी आपके अन्दर बदला लेने की भावना आयेगी तो नकारात्मक संकल्प बढ़ेंगे और परिणामस्वरूप मन अशान्त रहेगा। महात्मा गाँधी जी का यह संदेश कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं – हमें सांत्वना देता है। वास्तव में यही जीवन जीने की कला है।

प्रश्न : नार्वे के एक व्यापारी ने पूछा, आज कामकाज और ट्रैवलिंग में ही दिन के 14-15 घण्टे या उससे ज़्यादा समय जा रहा है। रात्रि को सोने के लिए भी देर होती है। इस व्यस्त जीवन-शैली में आध्यात्मिक पुरुषार्थ का कोई सरल उपाय बताइये?

उत्तर: कहने में आता है कि जो व्यस्त है उसी को समय की कद्र है, खाली आदमी तो समय के मूल्य को नहीं जान सकता है। अतः आप परमात्मा का धन्यवाद करें कि उसने आपको व्यर्थ सोचने से मुक्त किया हुआ है। अब आपको दिनचर्या व्यवस्थित करने और प्राथमिकताएँ चुनने की ज़रूरत है। दिन में दस-पन्द्रह मिनट भी आप आध्यात्मिकता के लिए देंगे, योग करेंगे, अच्छा साहित्य पढ़ेंगे तो आपकी आत्मा रूपी बैटरी रिचार्ज हो

जायेगी, फलस्वरूप आप सारे दिन तरोताज़ा भी बने रहेंगे और आपकी कार्य क्षमता भी बढ़ जायेगी। इसी बात को आध्यात्मिकता में कर्मयोग कहा जाता है।

प्रश्न : हॉलैण्ड में एक बुजुर्ग ने पूछा, मैं अकेलापन महसूस करता हूँ, कोई उपाय सुझाएँ?

उत्तर: आप स्वयं को कभी भी खाली न रखें, सदैव अपने को व्यस्त रखें। खुदा को दोस्त बना लें तो वह सारी जिन्दगी साथ भी देगा, हमें नेक राह पर चलना भी सिखायेगा और कभी भी अकेलेपन का भान नहीं आने देगा। हम मनुष्यों को अपना साथी बनाते हैं और फिर उनसे दगा-धोखा मिलता है तो दुनिया को कोसने लगते हैं। हमें यह समझना होगा कि हर आत्मा का अपना पार्ट है। कोई नायक की भूमिका में है तो कोई खलनायक की। लेकिन ज़रूरी यह है कि मैं स्वयं को देखूँ कि मेरा पार्ट क्या है? आप किसी समाजसेवी संस्था से जुड़ें, दूसरों की सेवा करेंगे तो आपका मन खुश रहेगा। ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग का सात दिन का कोर्स कर लें तो अवश्य ही आपका अकेलापन दूर हो जायेगा।

प्रश्न : आइसलैण्ड में एक महिला ने पूछा कि मेरा दाम्पत्य जीवन कलह-क्लेश वाला है, कृपया कोई समाधान सुझाएँ?

उत्तर: भारत में एक प्रसिद्ध कहावत है कि कभी भी एक हाथ से ताली नहीं बजती। आज देह अभिमान वश पति और पत्नी में से कोई भी अपनी गलती मानने को तैयार नहीं होता, कोई झुकता नहीं है। परिणामस्वरूप छोटी-सी बात का बतंगड़ बन जाता है। परिवार रूपी गाड़ी में पति और पत्नी दोनों पहिए हैं। किसी का भी महत्त्व कम नहीं है। मेल-जोल से रहना, गुणग्राही बनना, एक-दूसरे को आदर-सत्कार देना, सहयोगी बनकर रहना एवं केयरिंग-शेयरिंग आदि ऐसे गुण हैं, जिनको अपनाने से दाम्पत्य खुशियों से भरपूर हो जाता है।

आइसलैण्ड : ''राजयोग द्वारा सकारात्मक चिंतन'' विषय पर प्रवचन के बाद ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश भाई एवं अन्य भाई-बहनें ग्रुप फोटो में।

प्रश्न : स्वीडन में एक युवती ने पूछा, क्या बी.के. में अविवाहित लोग ही आते हैं?

उत्तर: ब्रह्माकुमारीज़ से आज विश्व-भर में लाखों लोग जुड़े हुए हैं, जिनमें कुमार-कुमारी, गृहिणी, व्यवसायी आदि सब शामिल हैं तथा उनमें से अधिकतर लोग पारिवारिक जीवन में रहते हुए यहाँ की शिक्षाओं का लाभ ले रहे हैं। हाँ बी.के. जीवन में नियम-मर्यादा, स्वच्छता, दृष्टि-वृत्ति की पवित्रता आदि पर बहुत जोर दिया जाता है। अनुभव सम्मत है कि जब हमारे जीवन में ये सब बातें होंगी तो हम आदर्श गृहस्थी बन जायेंगे।

प्रश्न : ग्रीस में एक व्यक्ति ने पूछा, मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती है, क्या राजयोग से मुझे कुछ लाभ हो सकेगा?

उत्तर: आज आयुर्विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि अधिकतर रोगों का कारण हमारा मन है। नकारात्मक चिंतन, परचिंतन, नफ़रत, ईर्ष्या, घृणा आदि के विचार मन को दूषित कर देते हैं। फलत: हम अनेकानेक बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। राजयोग का अभ्यास मन को सकारात्मक चिंतन से भरपूर कर देता है, जिससे मन शक्तिशाली हो जाता है और बुद्धि बलशाली हो जाती है। कहने की बात नहीं कि जब मन ठीक होगा तो तन स्वत: स्वस्थ हो जायेगा। इसलिए ही तो कहने में भी आता है – योग भगाये रोग।

प्रश्न : हंगरी में किसी व्यक्ति ने पूछा, लोग हमारी अच्छाई को हमारी

कमज़ोरी समझ कर उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। इन परिस्थितियों में अपनी अच्छाई को न छोड़ दूसरों को अधिकार में कैसे चलायें?

उत्तर: मेरी अच्छाई अर्थात् मेरा स्वमान। वास्तव में जब मेरे अन्दर कहीं-न-कहीं यह भान आ जाता है कि मैं बहुत योग्य हूँ, मैं सबसे ज़्यादा पढ़ा-लिखा हूँ तो वह अच्छाई दूसरों को खटकती है। इसके विपरीत मैं अपनी अच्छाई को भी ईश्वरीय अमानत समझूँ तो अवश्य ही सभी मेरा सम्मान भी करेंगे और मेरे साथ मेल-जोल भी रखेंगे। दूसरों की बुराई के कारण मुझे अपने गुणों को कभी भी नहीं छोड़ना है। और ही अपनी विशेषताओं से दूसरों को प्रभावित करना है ताकि दूसरे भी अच्छे और ज़िम्मेवार नागरिक बन सकें। दूसरों को अपने अधिकार में चलाने का समय अभी गया। अभी तो हम सब साथ-साथ हैं। किसी की कोई खूबी और किसी की कोई खूबी। हम सबको मिलकर एक समूह की तरह कार्य करना है, इससे ही विजय और सफलता सम्भव है।

प्रश्न : दुबई में पूछा, शाकाहारी भोजन का योग से क्या सम्बन्ध है?

उत्तर: जैसा खायेंगे अन्न, वैसा बनेगा मन। भोजन का सीधा प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। आज चूँकि हमारे खाने पर कोई कण्ट्रोल नहीं है, इसलिए ही तो हमारा मन भी हमारे कण्ट्रोल में नहीं है। साधकों के लिए कहा जाता है कि कम खाएँ, शुद्ध खाएं और भगवान की याद में खाएँ। आज तो सारी दुनिया में यह मान्यता है कि माँसाहार अनेक रोगों को जन्म देता है। शाकाहारी भोजन करने से हमारा तन और मन दोनों ही तंदुरुस्त हो जाते हैं। मन शान्त और स्वस्थ होगा तो योग साधना स्वत: और सहज हो जाती है।

प्रश्न : कतर, दोहा में किसी व्यक्ति ने पूछा, मैं अपने संघर्षमय जीवन से हार चुका हूँ, अब मेरी जीवन में कोई रुचि नहीं है, कृपया कोई हल सुझायें?

उत्तर: मूर्तिकार जितने ज़्यादा हथौड़े किसी मूर्ति को लगाता है, मूर्ति की सुन्दरता उतनी ही बढ़ती जाती है। किसी भी महान व्यक्ति का जीवन पढ़ लें, उन्होंने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किये तभी आज इतिहास उन्हें याद करता है। नदी में पड़ा पत्थर जल के थपेड़े सह कर ही सालिग्राम बन जाता है। अत: ज़िंदगी से कभी भी निराश न हों, हताश न हों, ना-उम्मीद न बनें। याद रखें कि कोई परीक्षा थोड़े समय ही चलती है। रात्रि के बाद दिन तो आना ही है। यह आपके जीवन का परीक्षाफल चल रहा है, जिसके बाद बारी आयेगी परिणाम की और आप अवश्य ही उसमें सम्मान सहित उत्तीर्ण होंगे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

प्रश्न : तुर्की में एक भविष्यवक्ता ने पूछा, कृपया संसार के भविष्य के विषय में बताएँ?

उत्तर: दिन के बाद रात, सर्दी के बाद गर्मी आना प्रकृति का नियम है। यह दुनिया कभी सतोप्रधान, सुखी और पवित्र थी लेकिन आज नहीं है। राहत की बात यह है कि हमें स्वयं परमात्मा ने यह बताया हुआ है कि वह सतयुगी संसार, दैवी दुनिया अब आई कि आई। जैसे फिल्म में जब सभी कलाकार एक साथ मंच पर आ जाते हैं तो फिल्म समाप्त हो जाती है। अति के बाद अंत होता है। अत: आज के हालात को देख हम चिंतित न हों, अपना पुरुषार्थ करें, श्रेष्ठ कर्मों की पूँजी जमा करते जाएँ, दूसरों की दुआएँ लेते चलें तो हमारा भविष्य अवश्य ही स्वर्णिम हो जायेगा और संसार भी श्रेष्ठ संसार में बदल जायेगा। ब्रह्माकुमारीज़ का सुवाक्य ही है – स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन। अत: विश्व का भविष्य जानने से पूर्व अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए वर्तमान को श्रेष्ठ बनाएँ तो भविष्य अपने आप अच्छा हो जायेगा। ❖

ज्ञानी वह है जो कारण शब्द को समाप्त कर हर बात का निवारण करता है

विश्व वृद्ध दिवस पर विशेष...

बुढ़ापे का भी आनन्द लीजिए

● **ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस**

कोई भी नहीं चाहता कि वह बूढ़ा दिखाई दे। वैज्ञानिक भी मनुष्य को सदा के लिए युवा बनाने की खोज में लगे हुए हैं। जीवन की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए इसे चार आश्रमों में बाँटा गया है जिसमें 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य, 50 वर्ष तक गृहस्थ, 75 वर्ष तक वानप्रस्थ और फिर संन्यास। इस कलिकाल में ब्रह्मचर्य की मर्यादायें तो अधिकांशत: बहुत पहले ही खत्म हो जाती हैं। औसत आयु 100 वर्ष तक न होने के कारण संन्यास का तो कोई नाम रह ही नहीं जाता है। रामचरित मानस में अयोध्याकांड में एक चौपाई आती है।

समीप भए सित केसा।
मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा।।

इसमें कहा यह गया है कि जब राजा दशरथ ने आइने में देखा कि उनके कान के पास के बाल श्वेत हो गये हैं तो उन्होंने सोचा कि अब समय आ गया है कि अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बना दिया जाये। लेकिन, आज तो कान के पास के बाल तो क्या शरीर के पूरे बाल ही सफेद हो जायें तो भी सांसारिकता नहीं छूटती।

परमात्मा है सच्चा साथी

सही समय पर संन्यास आश्रम धारण किये हुए वृद्ध तो अब बहुत कम ही दिखाई देते हैं। अब तो हाईटैक युग में, बच्चों द्वारा वृद्धाश्रम में भेजे जाने अथवा उपेक्षित किये जाने पर वृद्धावस्था में भी इण्टरनेट पर जीवन साथी की तलाश जारी रहती है। कुछ बिना इण्टरनेट की मदद के यह कार्य कर रहे हैं। अब अकेले हो चुके बुजुर्गों को तो ऐसे जीवन साथी की तलाश करनी चाहिए जो कभी न तो बूढ़ा हो, न ही बीच में छोड़कर जाने वाला हो। हम समझते हैं, वह तो एक ही परमपिता परमात्मा शिव हैं जो अजन्मा हैं, अभोक्ता हैं, अमर हैं और बीच में छोड़कर जाने वाले भी नहीं हैं। उन्हीं के पास अन्तत: सभी को जाना भी है। उनको एक सहारा, एक आसरा, एक भरोसा और सर्व संबंधी बना ही लेना चाहिए।

चौथा चरण

हर उम्र की अपनी एक मर्यादा होती है। कोई बच्चा यदि बुजुर्ग की तरह बातें या व्यवहार करे तो अटपटा-सा लगता है, इसी प्रकार यदि कोई बुजुर्ग किसी बच्चे या युवा की तरह बर्ताव करे तो देखने में कुछ अजीब-सा लगता है। जब शरीर के अवयव कह रहे हैं कि अब हम विदाई ले रहे हैं तो फिर उन्हें दूसरा रंग-रूप देने से तो यौवन नहीं आ जायेगा। ध्यान में रहे, यह उम्र है बच्चों को अपने कर्मों और संस्कारों द्वारा नसीहतें देने की, अपने अनुभवों से भावी पीढ़ी को लाभान्वित करने की, उनमें चरित्रवान संस्कार भरने और दैवी मूल्यों को जाग्रत करने की, प्रभु स्मरण की। चूंकि शरीरान्त तो होना ही है, अत: 'अन्त मति सो गति' की तैयारी के लिए यह चौथा चरण है, नहीं तो पकी फसल में पानी, खाद इत्यादि लगाने से क्या फायदा!

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के युवा प्रभाग द्वारा युवाओं को एक नारा दिया जाता है - युवा जागेगा तो जग जागेगा। भगवान भी कल्प के बाद, कलियुग के इस अन्तिम चरण में सभी को ज्ञान अमृत देकर जगाते हैं। हम समझते हैं कि युवाओं के साथ-साथ बुजुर्गों को भी जागना चाहिए, चाहे वे लौकिक सेवायें कर रहे हों या सेवानिवृत्ति वाले हों। किन-किन बातों में जागना चाहिए, थोड़ा अवलोकन करेंगे –

अपेक्षाएँ - अधिकांश बुजुर्ग यह चाहते हैं कि जो कार्य उन्होंने अपने जीवन में उच्च स्तर के किए हैं, पद या प्रतिष्ठा प्राप्त की है उनके बच्चे भी कम से कम वैसा ही करें या उससे कुछ अधिक करके दिखायें। उच्च

बनने या बनाने की इच्छा कोई बुरी बात नहीं है लेकिन क्या यह हमेशा संभव है कि आपके रुझान के अनुरूप ही आपके बच्चों का रुझान हो? कई बार जब ये अपेक्षाएँ अधिकार का रूप धारण कर लेती हैं तो दु:ख का कारण बन जाती हैं। ऐसे में आप यह सोचिये कि सबसे नज़दीकी और प्यारी चीज़ शरीर, जिसे कितना संभाला, मालिश करके रखा, धूप, वर्षा, अग्नि से बचाया फिर भी वृद्ध होने पर पूरा साथ नहीं दे रहा है। फिर अपने से अलग लोगों के लिए इतनी आशाएँ क्यों? हम ज्ञान अथवा अनुभवों के आधार से सामंजस्य बिठाना सीखें, यदि कष्टप्रद हैं तो पुरानी विचारधाराओं को बदलें।

लालसाएँ – बुजुर्गों की एक महत्वाकांक्षा यह भी होती है कि उनके बच्चे वह करें जो वे नहीं कर पाये। कई अच्छी नौकरी, अच्छी बहू, अच्छा दहेज, नाती-पोती आदि की भी आशायें लगाये रहते हैं। शादी-ब्याह के मामलों में तो यहाँ तक भी देखने में आता है कि खुले आम माँगें कन्या पक्ष के सामने रखी जाती हैं। ऐसे में धन की लालसा के बजाय, घर की शान्ति को अधिक महत्व दीजिए।

इन्हें भी करने दीजिये – जीवन भर आपने बहुत कमाया खाया, संवारा और गंवाया अब इन्हें भी करने दीजिए। हमारा तात्पर्य यह नहीं है कि बच्चे गलत कदम उठा रहे हों, उल्टा-सुल्टा खान-पान कर रहे हों या गलत रास्ते पर जा रहे हों तो हम उन्हें नज़रअंदाज कर दें। यदि वे कुछ गलत कर रहे हैं तो प्यार से उन्हें सही राह बता दें। बुरे कार्यों के परिणामों की वास्तविक जानकारी देकर उन्हें समझा दें। प्यार वह चीज़ है जो पत्थर को भी पिघला सकता है।

अधिक धन इकट्ठा करके भी क्या करेंगे ?

यदि आप निरन्तर घर में ही रहते हैं तो इस चारदीवारी से बाहर निकलिये। अच्छी संस्थाओं के सम्पर्क में आकर अपने अनुभवों को बाँटिये, अपना समय समाज सेवा में सफल करिए। कई बार देखा जाता है कि सेवानिवृत्त होने के बाद भी बहुत से बुजुर्ग येन-केन-प्रकारेण धन संग्रह के लिए कोई न कोई नौकरी, व्यापार-धन्धा आदि कर लेते हैं और उतना ही व्यस्त हो जाते हैं जितना पहले थे। हाँ, आवश्यकता यदि करा रही है और आत्मसम्मान को बचाने के लिए करना पड़ रहा है तो किया जा सकता है, नहीं तो, अगर आगे की जीवनचर्या चलाने के साधन पर्याप्त हों तो फिर इस मायाजाल से निकल आना ही चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है -

पूत सपूत तो क्यों धन संचय,
पूत कपूत तो क्यों धन संचय।।

यदि पुत्र सुपात्र नहीं है तो वह आपकी जमा की गई सम्पदा को भी खत्म कर देगा। यदि पुत्र, सुपुत्र है तो चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है, स्वयं कमा लेगा।

बहुत गई थोड़ी रही.... यह जानकर, स्वयं को रूह मानकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नामक रूहानी गीता ज्ञान यज्ञ, जो स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से रचा है, में अपने अनुभवों व कौड़ियों को सफल कर लें और बच्चों से भी करायें (यदि उनकी इच्छा है तभी)। तब ही यह जीवन हीरे तुल्य कहलायेगा वरना 'रात गंवाई सोय के और दिवस गंवाया खायके...' और जीवन कौड़ियों के पीछे, कौड़ियों के भाव माटी के मोल बिक जायेगा। राम-नाम सत्य है, देखते-देखते हो जायेगा। इसलिए हे बुजुर्गो, आप भी जागो, हे अनुभवी मूर्त जागो, शिव जगाने आये हैं। भगवान भोलेनाथ शिव वह युग अथवा दुनिया बनाने की सेवा पर तत्पर हैं जहाँ देवता कभी बूढ़े नहीं होंगे। कहा गया है,

दैहिक दैविक भौतिक तापा,
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।

आप सभी बुज़ुर्गों का स्वागत है उस दैवीय संस्कृति की स्थापना के कर्त्तव्य में परमात्मा के मददगार बनने और बनाने के लिए। ❖

वैद्यनाथ शिव का आरोग्य मन्दिर

ग्लोबल हॉस्पिटल एवं ट्रोमा सेन्टर

● ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन (आबू रोड)

भारत की अरावली शृंखलायें पश्चिमोत्तर प्रदेशों में फैली हैं। अरावली की सर्वोच्च शृंखला आबू को लोग प्यार से अब्बा का घर भी कहते हैं। तपोभूमि आबू की मनभावन वादियों में आध्यात्मिक केन्द्रों के साथ ही वैद्यनाथ शिव पिता के इशारे प्रमाण 'ग्लोबल हॉस्पिटल एवं ट्रोमा सेन्टर' के द्वारा अगणित आत्मायें स्वास्थ्य लाभ पा रही हैं। आबू क्षेत्र के लोग ही नहीं, पर्यटन व आध्यात्मिक केन्द्र होने से देश-विदेश के बहुत-से लोग भी इस हॉस्पिटल का लाभ प्राप्त करते रहते हैं। ट्रोमा का आकस्मिक निदान और नेत्र चिकित्सा हजारों को राहत पहुँचा रहे हैं।

हॉस्पिटल के जन्मदाता व मुख्य कर्त्ताधर्ता:- करीब दो दशक पहले मुंबई में दादी हृदयमोहिनी जी का ऑपरेशन करते समय डॉ.अशोक मेहता को अनेक अलौकिक अनुभव हुए। जिज्ञासावश जब वे दादी जी से मिलने आबू आये तो जनता-जनार्दन को चिकित्सा सुविधा देने के लिए उनकी नजरें इस तपोभूमि पर जमीन तलाशने लगीं। वरिष्ठ भ्राता निर्वैर जी से नज़दीकियाँ बढ़ने पर जे.वाटूमल खूबा के सहयोग से ग्लोबल हॉस्पिटल

का प्रारूप तैयार किया गया। किशोर भाई के अपनी जमीन देने से मेडिसन और मेडिटेशन के माध्यम से नव जीवन पाने का ताना-बाना बुना जाने लगा। जहाँ नाले-चट्टान, झोंपड़ी, झाड़-झंखाड़ थे वहीं सोनल बहन ने एक अस्पताल का सुन्दर मॉडल खड़ा करवा दिया। डॉक्टर बनारसी, डॉक्टर प्रताप मिड्ढा तथा डॉ.सतीश गुप्ता जी जैसे चालीस सेवाधारी भाई-बहनें 24 अक्टूबर, 1991 से अपनी सेवायें अर्पित करने लगे। इस होली स्थल के विशेषज्ञ चिकित्सकों और सहकर्मियों की टोली रात-दिन मरीजों की सेवा सुश्रुषा में तत्पर रहने लगी। रोगी और उनके संबंधियों को नि:शुल्क सलाह भी मिलने लगी। जैसे चिड़िया दूर से तिनके चुनकर अपने बच्चों के लिए घोंसला बनाती और सुविधायें जुटाती है वैसे ही विश्व हितकारी निर्वैर भाई जी के संरक्षण में आधुनिकतम साधन, सामान व मकान तैयार होते जा रहे हैं। नर्सेज, कंपाउंडर तथा सहकर्मी बड़े सत्कार व प्यार से रोगियों को असमर्थ से शीघ्र समर्थ बना देते हैं।

चार सौ से भी अधिक सेवा साथियों की टोली के साथ डायरेक्टर डॉ. अशोक मेहता तथा डॉ. प्रताप मिड्ढा जी सुंदर स्वच्छ परिवेश में सुयोग्य व्यवस्थायें बनाये रखते हैं। विश्व कल्याण में रत समर्पित भाई-बहनों और धार्मिक-सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए यहाँ शत प्रतिशत नि:शुल्क सेवायें प्रदान की जाती हैं। गरीब, बेसहारा आदिवासी लोगों के लिए 60% से भी अधिक नि:शुल्क सुविधायें दिलवाने की कोशिश होती है। करीब आधे डॉक्टर्स, नर्सेज और व्यवस्थापक पूर्ण समर्पित होकर आजीवन अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं। उन्हें देखकर देश-विदेश के भी बहुत-से विशेषज्ञ सप्ताह, मास, दो मास की नि:शुल्क

सेवा हेतु आते ही रहते हैं।

अनुसूचित आदिवासीय क्षेत्र होने के कारण खेत-खलिहानों, घाटी-पहाड़ियों से घंटों पैदल चलकर आने वालों को जब यहाँ का स्टाफ प्यार-दुलार के साथ संभालता है तो लोग झुक-झुक कर धन्यवाद देते हुए आँखें भरकर जाते हैं। कई सचल चिकित्सा वाहनों द्वारा आँख, नाक, कान, गला आदि बीमारियों के लिए स्वास्थ्य शिविरों का भी आयोजन होता रहता है। आकस्मिक घटनाओं या गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए इस क्षेत्र के लोग पहले जोधपुर या अहमदाबाद जाते थे परंतु उच्च सस्ती सर्जिकल सुविधायें उपलब्ध होने से दूर-सुदूर से लोग यहीं आकर स्वास्थ्य लाभ लेते हैं।

माउंट आबू के ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर के साथ आबू रोड तलहटी में राधा मोहन मेहरोत्रा और पी.सी.परमार जी के सहयोग से उच्च गुणवत्ता वाले आई हॉस्पिटल एवं ट्रोमा सेन्टर का निर्माण हुआ है। तीन हजार से भी अधिक लोग यहाँ प्रतिवर्ष आँखों का नि:शुल्क सफल ऑप्रेशन करवा रहे हैं। चिकित्साकर्मी आस-पास के सैकड़ों गाँवों में जाकर कई रोगियों का वहीं निदान करते या फिर उन्हें हॉस्पिटल में लाकर हेल्दी-वेल्दी बनाते हैं। इसमें करीब छब्बीस चिकित्सकीय विभाग हैं जैसे मेडिसन, हृदय रोग, आँख व दाँत तथा नाक-कान-गला विभाग, स्त्री रोग, शिशु रोग, फिजियोथेरेपी, मेगनेट थेरेपी, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, एक्यूपंक्चर, एक्यूप्रेशर, मनोरोग, हड्डी रोग, शल्य चिकित्सा, निश्चेतना, पैथोलोजी, रेडियोलॉजी, आधुनिकतम ब्लड बैंक, फार्मेसी, सोनोग्राफी, सीटी स्केन, अटोएलाइजर, वार्ड मेनेजमेंट और नर्सिंग ट्रेनिंग सेन्टर आदि-आदि। अन्य सहयोगी विभाग भी हैं जैसे चश्मा, फोटोग्राफी, फोटोस्टेट, कंस्ट्रक्शन, सिक्योरिटी, एकाउंट रिसेप्शन, आवास-निवास, लाइब्रेरी, लांड्री, किचन, सफाई, ट्रांसपोर्ट, सोलर ऊर्जा, सेंट्रल कुलिंग-हीटिंग सिस्टम तथा एडमिनिस्ट्रेशन विभाग। इसी का अनुसरण करते हुए मुंबई में 250 बिस्तरों का बी.एस.ई.एस. हॉस्पिटल तथा बड़ौदा में ब्रिगेडियर बोरा क्लीनिक भी सुचारु चल रहे हैं।

इतनी ऊँची, जनहितकारी, विस्तृत और सस्ती सेवाओं के कारण प्रतिमाह करीब 25-30 लाख रुपये का घाटा उठाते हुए भी ग्लोबल हॉस्पिटल एवं ट्रोमा सेन्टर ब्रह्माकुमारीज़ की छत्रछाया में तथा अन्य शुभइच्छुक दानदाताओं के सहयोग से दिन दूना रात चौगुना उन्नति की ओर कदम बढ़ाता जा रहा है। यहाँ डॉक्टर सतीश गुप्ता जी के संरक्षण में हृदय रोग पर एक अद्भुत आध्यात्मिक प्रयोग चल रहा है। तीन हजार से भी अधिक हृदय रोगी शुद्ध भोजन, मेडिटेशन और नियमित हल्के व्यायाम पद्धति से पूर्ण स्वस्थ हो चुके हैं। इस सहज राजयोग की सस्ती पद्धति को अच्छी तरह से जानने के लिए भूतपूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम जी भी देख-परख कर अति प्रसन्न हुए तथा इसके उत्तरोत्तर विकास के लिए उन्होंने सलाह-सहयोग भी दिये। भारत के पाँच प्रसिद्ध अनुसंधान केन्द्रों के सहयोग से और ब्रह्माकुमारीज़ के उच्च मनोयोग से इस (CAD) के सौ से भी अधिक कैंप आयोजित हो चुके हैं। मॉरिशियस व मलेशिया सरकार के साथ-साथ अन्य अनेक देशों में ऐसे उपचार को बढ़ाने हेतु संपूर्ण सहयोग मिल रहा है। इसकी सफलता को देखकर कैंसर, एड्स, डायबिटिज जैसे जानलेवा रोगों पर भी ऐसे ही आध्यात्मिक प्रयोग किये जाने हेतु विचार-विनिमय किया जा रहा है। गुणों-शक्तियों के सागर शिव से शक्ति लेकर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु ग्लोबल अब नित नया प्रयोग करता ही रहता है जिससे मेडिसन और मेडिटेशन को एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह स्वीकार कर लोग सदा निरोगी बनते जायेंगे।

❖

विकारों पर विजय...पृष्ठ 3 का शेष

विजय-दशमी के दिन प्रतिवर्ष भारतवासी रावण का बुत जलाते हैं लेकिन क्या इससे रावण जल जाता है? वास्तव में उन्हें यह भी पता नहीं कि रावण कौन है और उसे कैसे जलाया जा सकता है। साधारणत: बुत जीवित दुश्मन का ही जलाया जाता है। मरे शत्रु का पुतला नहीं जलाया जाता। अत: रावण का पुतला जलाने से भी स्पष्ट है कि रावण अभी जिन्दा है और उससे हमको घोर क्षति हो रही है। रावण का अर्थ है रुलाने वाला। दस सिर का तो कोई मनुष्य हो नहीं सकता। यह एक अलंकारिक भाषा है। रावण माया के पंच विकारों का प्रतीक है।

भारतीय संस्कृति प्रवृत्ति परक है। पवित्र प्रवृत्ति मार्ग का प्रतीक चतुर्भुज विष्णु है। विष्णु श्री लक्ष्मी एवं श्री नारायण का संयुक्त रूप है। चतुर्भुज विष्णु की चार भुजायें श्री लक्ष्मी और श्री नारायण की दो-दो भुजाओं की द्योतक हैं। उसी तरह रावण विकारी प्रवृत्ति मार्ग का प्रतीक है। पुरुष के पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) और स्त्री के पाँच विकार ही संयुक्त रूप में रावण के दश शीश हैं। योगबल से इन विकारों को जला कर ही हम सच्चा दशहरा मना सकते हैं। दशहरे का भी अर्थ है पति-पत्नी के इन दस विकारों का हरण होना।

द्वापर युग से आत्मा रूपी सीता कंचन-मृग के आकर्षण में पड़ परमात्मा राम से विमुख होकर माया रूपी रावण के चंगुल में फँस जाती है। कलियुग के अंत तक जब सारी सृष्टि शोक-वाटिका बन जाती है तब निराकार परमात्मा आकर ज्ञान-योग के अमोघ अस्त्र-शस्त्रों से माया-रावण पर विजय दिलाते हैं और पावन सतोप्रधान सतयुगी दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना कराते हैं। आधाकल्प से अजेय रावण पर विजय दिलाने के लिए परमपिता परमात्मा शिव माताओं को निमित्त बनाते हैं और उनके सिर पर ज्ञानामृत का कलश रखते हैं। ज्ञान, योग और अखण्ड ब्रह्मचर्य की दिव्य शक्ति से सुसज्जित भारत माता शक्ति अवतारों की हुंकार से रावण के विश्व विजयी सेनापति धराशायी हो जाते हैं और रामराज्य की स्थापना हो जाती है। इसीलिए विजय-दशमी के पूर्व नवरात्रि में पवित्र कन्याओं का पूजन होता है। विकारों से तप्त मनुष्यात्माओं को इन्होंने शीतल बनाया था। अत: शीतला के रूप में भी इनकी पूजा सर्वत्र होती है।

आज तक आप सभी रावण का पुतला जलाने का खेल खेलते आये हैं। आइये, इस विजय-दशमी के पावन दिवस पर हम दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव की शक्ति सेना में सम्मिलित होकर अपने में विद्यमान मनोविकार रूपी रावण का समूल नाश करेंगे और मायावी मनुष्यों को पूर्ण पवित्रता का ईश्वरीय संदेश सुनाकर रावण की इस माया नगरी पर परमात्मा राम का विजय ध्वज फहरा देंगे। तब इस देवभूमि भारत पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहाँ प्रत्येक नर-नारी का आत्मा रूपी दीपक पूर्ण प्रज्वलित होगा और रत्न-जड़ित स्वर्ण महलों में घी-दूध की नदियाँ बहेंगी।

❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा

(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)

दिनांक : 29-31 अक्टूबर तथा 1 नवंबर, 26-29 नवंबर 2012

सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन

पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 **वेबसाइट**: www.ghrc-abu.com

फैक्स: 238570 **ई-मेल**: drmurlidharsharma@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org